आएल आशा चलि गेल

आएल आशा चलि गेल

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

AAEL AASHA CHALI GEL (आएल आशा चलि गेल)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-01-8
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2022)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम:

आएल आशा चलि गेल/07

अकारण/15

अछोप/26

अप्पन बेइमानी/35

उनटन/43

अर्द्धांगिनी/52

बहवाँइर/60

पाक मास्टर/68

साइंस टीचर/75

इज्जत लऽ लेलक/82

निसगर पान/89

'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम/96

आएल आशा चलि गेल

सुर्जग्रहण वा चन्द्रग्रहण छुटला पछाइत जहिना लोक नदी, सरोवर वा पोखैरमे नहाइले धरोहि लागि जाइ छैथ तहिना रूद्रपुर गाममे रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार समाजक लोकमे जगलैन। जिनका अपना हाथमे बटखर्चा[1] रहैन से तँ निचेने रहला मुदा जिनका अपना हाथ-मुट्ठीमे पाइ नहि रहैन ओ ऋण-पैंच ताकए दोसरा-तेसराक घरपर जाए-आबए लगला, जइसँ रामेश्वरम जेबाक जिज्ञासा अधिकांश लोकक मनमे जगलैन। मोतीलाल सेहो मने-मन विचार कऽ लेला जे जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरम जाइले तैयार भेला अछि तखन अपनो किए ने जाएब।

असकर-दुसकरमे ने कोनो नव प्रश्न उठने मनमे अधिक विचार जगैए मुदा समूहमे तँ से नहि होइए। भेड़िया-धसान लोक भइये जाइ छैथ। जहिना अपन-अपन विचारक कान्हीनुकूल लोक केतौ बाहर जेबाकाल संगी ताकए लगै छैथ तहिना मोतीलाल अपन विचारी संगी ताकैले हीरालाल ऐठाम विदा भेला। ओना, हीरालाल आ मोतीलालक उमेरमे दस सालक तरपट छैन, मुदा एकविचारी रहने एकउमेरिया भाए-भैयारी जकाँ दुनूक बीच सम्बन्ध बनियेँ गेल छैन। हीरालालक उमेर साइठ बरख टपि एकसठममे चलि रहल छैन आ मोतीलालक एकावनमक अन्तिममे जा रहल छैन।

दरबज्जापर बैसल हीरालाल सेहो गाम-समाजकेँ देखि मने-

[1] **बाटमे खर्च होइबला भाड़ा-किराया आदि**

मन विचारि रहल छला जे आएल आशा चलि गेल.! चालीस बरख पूर्वे मनमे रोपाएल छल जे परिवारसँ निचेन होइते, माने परिवारक जवाबदेहीक काजसँ निचेन भेला पछाइत चारू धामक दर्शन करि कऽ शरीर तियाग करब, मुदा से मनेमे रहि गेल। मने-मन हीरालाल सोचिये रहल छला कि तइ बिच्चेमे मोतीलाल लगमे आबि टोकलकैन-

"भाय, अहींकेँ कहैले एलौं हेन जे गामक लोक उनैट कऽ रामेश्वरम जा रहल अछि, अपनो दुनू भाँइ चलू।"

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल मने-मन विचार करए लगला जे जखन मोतीलाल दरबज्जापर आबि कहि रहल अछि तखन की कहिऐ? जँ 'नइ जाएब' कहबै तँ पुछबे करत जे 'किए ने जाएब?' आ जँ 'हँ' कहबै तँ अनेरे पैंच-उधारक पेंचमे पड़ि जाएब.! हीरालालकेँ चुप देखि मोतीलाल दोहरा कऽ पुछलकैन-

"भाय, किछु बजलौं नहि?"

हीरालाल बजला- "मोतीलाल, मनमे अपनो विचार छल जे जखन परिवारसँ निचेन हएब तँ चारूधामक तीर्थ जरूर करब, मुदा..।"

मोतीलाल बजला- "की मुदा, भाय?"

अपन मनक दाबल विचारकेँ खोलैत हीरालाल बजला- "मोती, एक तँ ओहुना केकरो लग झूठ नहि बजै छी, तूँ तँ सहजे छोट भाए सदृश छह, तोरे केना झूठ कहबह।"

मोतीलाल पुछलकैन- "से की भाय?"

हीरालाल बजला- "आइ ने देखै छहक जे समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ रामेश्वरमक दर्शन करैक विचार केलैन अछि मुदा अपना मनमे आइसँ चालीस बरख पूर्वे रोपि नेने रही जे अखन

परिवारकेँ सम्हारि असथिर करब जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण काज अछि। जखन परिवार असथिर भऽ चैनसँ चलए लगत तखन तीर्थ-वर्त करब।"

ओना, हीरालाल अपन पेटक सभ विचार बाजि गेला मुदा मोतीलाल से बुझबे ने केलैन। बजला-

"भाय, नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं?"

हीरालाल बजला-

"मोती, आइसँ चालीस बरख पूर्व, जहिया अपन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली, तही दिनक विचार छी। जाबे तक दुरागमन नहि भेल छल आ माए-बाबू सेहो जीबै छला ताबे तक हुनके परिवार बुझै छेलिऐन। मुदा जखन दुरागमन भेल आ पत्नी घर एली तखन परिवारक बीच नव परिवारक उदय ओहिना भेल जहिना बाँस, खरही वा केराक बीटमे नव गाछक जन्म भेने होइए।"

अपना जनैत हीरालाल अपन जीवनक सत्यवृत्तिकेँ मोतीलालक सोझामे रखलैन, मुदा समाजक बीच जे अखन तकक वैचारिक परिवेश रहल अछि ओ तँ यएह ने रहल अछि जे जाबे तक परिवारमे माता-पिता जीबैत रहै छैथ ताबे तक पत्नीक कोन बात जे धियो-पुतो भेला पछातियो लोक अपन परिवार नहि बुझि माते-पिताक परिवार बुझै छैथ, तहिना मोतीलाल सेहो बुझलैन। तँए परिवारक बीच नव परिवारक सृजन केना होइए तइ दिस मोतीलालक नजैर गेबे ने केलैन। बजला-

"भाय, एहेन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइए।"

मोतीलालकेँ अपन विचारानुकूल बनबैक खियालसँ हीरालाल बजला। जहिना कोनो रचनाकार वा संगीतकार अपन पैछला विचार वा धुन (लय) केँ ऐगला विचार वा लयकेँ जोड़ैकाल विचारवद्ध वा

लयवद्ध होइ छैथ तहिना हीरालाल मोतीलालक विचारकेँ विचारवद्ध करैत बजला-

"मोती! तोहींटा नहि, अपनो देखबो करै छी आ बुझितो तँ छीहे जे माता-पिताक अमलदारीमे परिवारक जवाबदेह बेटा नहि माइये-बाप होइ छैथ, मुदा जखन परिवारक सृजन होइए, माने पति-पत्नीक गठन होइए, तखन तँ बेटो जवाबदेह बनियेँ जाइए किने।"

अपना जनैत हीरालाल परिवार-सृजनक पहिल सूत्र बाजल छला, मुदा से सूत्र मोतीलालक मनमे घर करबे ने केलकैन। सरपट चालिक दौड़ दौड़ैत मोतीलाल पुन: अपनहि धुनिमे बजला-

"भाय, एहेन कि अहींटाकेँ भेल अछि आकि सभकेँ होइ छै।"

मोतीलालक विचारकेँ अधडरेरपर सँ काटैत नहि बल्कि लवान करैत, माने मोड़ैत, हीरालाल बजला- "हँ, से तँ सभकेँ होइए.! मुदा बेकती-बेकतीक विचारमे सेहो अन्तर होइते अछि। जेकर जेहेन विचार रहल से तेहेन बुझबो करैए आ ओहने जीवनो बनैबते अछि।"

ओना, मोतीलालक मनमे रामेश्वरम जेबाक विचार नाचिये रहल छेलैन कि बिच्चेमे हीरालाल अपन जीवनक विचारक चर्च शुरू कऽ देलैन। मुदा से मोतीलालक मनकेँ नीक जकाँ छुबिये ने रहल छेलैन, जइसँ उखड़ल-उखड़ल सन मन मोतीलालक छेलैन्हे। अपन विचारकेँ पुन: अगुअबैत मोतीलाल बजला-

"भाय.! परिवार छी ने, ने दूटा परिवार एकरंग होइए आ ने बिना दू-परिवारकेँ एकसंग चलने कल्याणे होइए।"

हीरालाल बजला- "हँ से तँ नहियेँ होइए।"

हीरालालक विचारक सह पेबिते मोतीलाल बजला- "अही दुआरे ने एलौं हेन। जखन आनो-आनो परिवारक संग तीर्थ-वर्त करैत चलब तखने ने एक-दोसरमे जीवनक संकल्प-सूत्र सेहो

मजगूत होइत जाएत आ एक-दोसरपर बिसवास सेहो बढ़ैत चलत।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

हीरालालक विचारक सह देखि मोतीलाल बजला-

“भाय, लग-पासक स्थान (धर्मस्थान) मे लोक असगरो-दुसगर जाइ-अबैए, मुदा रामेश्वरम तँ से नहि छी। देशक दच्छिनवरिया छोरपर स्थापित अछि, जैठाम पहुँचैले हजारो किलोमीटरक रास्ता तय करए पड़ैए।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ तय करैये पड़ैए।”

‘करैये पड़ैए’ सुनिते जहिना साधारणो हवाक सिहकी पेब गाछसँ पाकल आम धब-धब खसैए तहिना मोतीलालक पेटक विचार धब-दे खसलैन-

“भाय, लग-पासक धर्मस्थानो ओहने होइए जेहेन नीक-सँ-नीक विचार बेकतीगत होइए, मुदा दूरक स्थानो तँ ओहन होइते अछि जेहेन समूहक बीच सामूहिक काज होइए।”

हीरालाल बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि।”

हीरालालक सहीट विचार सुनि मोतीलाल बजला-

“भाय, जेतए जे होइए से तेतए होउ। जानए जअ आ जानए जत्ता। मुदा अपना दुनू भैयारीमे से नहि अछि, जहिना एक-दोसरक सुख-दुखकेँ दुनू भाँइ एक बुझै छी तहिना ने जीवन-यात्रामे सेहो एकसंग रहबे करब। एकरंग परिवार रहने जहिना अहाँक परिवार अछि तहिना ने अपनो अछि। तँए जँ कोनो नीक-बेजाए काजक

यात्रा रहत तँ दुनू भाँइ विचारिये कऽ ने करब।”

हीरालाल बजला-

“एकरा के काटत।”

अपन अकाट्य विचार सुनि मोतीलालक मन दहैल गेलैन। बजला-

“भाय, जखन समाजक अधिकांश लोक एकमुहरी भऽ तीर्थ करए जा रहला अछि तखन अपनो दुनू भाँइ किए ने चली।”

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल बजला-

“समाजक लोक तँ लोके छैथ, सदिकाल भेड़िया-धसानक बाट पकैड़ चलिते छैथ। मुदा अपनो सभ जँ ओहिना चलब तखन भेड़िया-धसान लोकसँ अन्तरे की भेल। अपन बीतल दिनक विचार पहिने सुनि लएह, पछाइत विचारकैँ सूहकारि आगूक विचार करब।”

मोतीलाल बजला-

“भाय, काज छोड़ि माने परिवारक काज, मात्र देवस्थानक विचार करए आएल छेलौं तँए समय कम अछि, अगुताएल छी।”

हीरालाल बजला-

“बेसी नहि मात्र एक्केटा विचार अछि, लगले कहि दइ छिअ।”

हीरालालक विचार सुनि मोतीलाल चुपे रहला, मुदा नजैर उठा हीरालालक नजैरपर जरूर देलैन।

हीरालाल बजला-

“रामेश्वरमेटा नहि, देशक चारू धाम–रामेश्वरम, जगरनाथ, द्वारिका आ अमरनाथ–क दर्शन करबक विचार अपनो मनमे रोपने छेलौं, मुदा धीरे-धीरे बाल-बच्चा भेने सेहो आ माता-पिताक आयु

बढ़ने सेहो, परिवारक भारक बोझ बढ़िते गेल, जइसँ चारूधामक दर्शनक विचार तर पड़ैत गेल। अखन तक देखिते छहक, माता-पिताक पार लगबैत दूटा बेटोकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं, बिआह-दान केलौं आ चारिटा बेटीक बिआह-दान सेहो करबे केलौं।"

'चारिटा बेटीक बिआह-दान' सुनि मोतीलालक नजैर अप्पन दुनू बेटीपर पड़लैन। बजला-

"भाय, तेहेन दुरुह परिवेश समाज बना लेलैन अछि जे गंगो असनानसँ भारी बेटीक बिआह-दान भऽ गेल अछि।"

भारी-सँ-भारी काज किए ने हुअए, जेकरा करैकाल कठिन-सँ-कठिन परिस्थितिक सामना किए ने करए पड़ए, मुदा काज भेला पछाइत मन जहिना समगम भऽ जाइए तहिना हीरालालकेँ भऽ गेल छेलैन, मुदा मोतीलालकेँ तँ से नहि भेल छेलैन तँए नजैर निच्चाँ खसि रहल छेलैन, जेकरा देख-सुनि बोल-भरोस दैत हीरालाल बजला-

"मोतीलाल, पारिवारिक जीवन जँ शान्त-चित्तसँ निमाहि ली, तँ ओ गंगोअसनानसँ पैघ काज भेबे कएल किने।"

हीरालालक विचारक वाण जेना मोतीलालक हृदयकेँ छेद देलकैन तहिना तिलमिलाइत बजला-

"भाय, परिवारक विचार छोड़ू। जइ काजे आएल छी तैपर विचार करू।"

हीरालाल बजला-

"मोती, अखन अपने साइठ बरख टपि एकसठममे प्रवेश केलौं अछि। तैबीच मातो-पिताक पार-घार लगेलौं आ बेटा-बेटीक सेहो पार-घाट लगेबे केलौं। जइसँ परिवारक भारसँ मुक्त भइये गेल छी, तँए आब अपनो मनमे अछि जे शेष जिनगी किए ने धर्म-कर्ममे

बिताबी, मुदा..?”

‘मुदा’ सुनिकऽ तँ नहि मुदा हीरालालक जीवन देखि मोतीलाल बजला-

“भाय, अहाँक जीवनक हिसाबे अपने बीच मझधारमे पड़ल छीहे, तैठाम रामेश्वरमक दर्शन करब जरूरी आकि बेटीक बिआह-दान पार लगाएब?”

मोतीलालक विचार सुनि हीरालाल बुझि गेला जे जइ मने मोतीलाल आएल छल से आब आगू-पाछू हुअ लगलै। हीरालाल बजला-

“मोती, सभ दिन मनमे छल जे चारूधामक यात्रा करी मुदा दूरक यात्रा रहने बेसी ओरियानो-बातक खगता छऽले। एक तँ ट्रेनक सफर हएत जइमे समैयक संग खर्चो-बर्च हेबे करैत। मुदा जखन साइठ बर्खक उम्रसँ बेसीबलाकेँ गाड़ीक भाड़ामे सुविधा भेटल तखन मन आरो हलैस गेल जे परिवारक निमरजना भेला पछाइत चारू धामक दर्शन सेहो हेबे करत। मुदा गाड़ीक भाड़ामे जेतेक छूट भेल तइसँ बेसी बढ़िये गेल, माने सुविधा समाप्त भऽ गेल, आब नइ जा सकब। ओना तीर्थ-वर्तक नामपर पैंच-पालट सेहो समाजमे भेटते अछि, मुदा जखन कर्जे लऽ कर्ज चुकाएब तखन कर्जासँ छुटकारा केना भेटत।”

मोतीलाल बजला-

“हँ, से तँ नहियेँ भेटत।”



शब्द संख्या : 1478, तिथि : 15 मई 2022

अकारण

मनोहर भाय झंझारपुर बाजारसँ आएले रहैथ कि पत्नी कहलकैन-

“सुबुधकाका तँ आइ बताह भऽ गेल छैथ.!”

पत्नीक विचार मनोहर भाइक मगजमे जेना ठाँहि-दे लगलैन। एक तँ बैशाख मास तैपर बीच दुपहरियामे झंझारपुरसँ पएरे आएल छला, तँए मन तबधल छेलैन्हे, तैपर पत्नीक मुहसँ सुबुध कक्काक समाचार सुनि मनोहर भाइक मन आरो राँइ-बाँइ भऽ गेलैन।

मनोहर भायकेँ कोनो विचारकेँ सही ढंगसँ सोचै-विचारैक जेना शक्तिये छिन्न-भिन्न भऽ गेलैन। मन थिर करैत मनोहर भाय बजला-

“बहुत गरमी छै, तँए अखन चाह नहि पीब। एक गिलास नेबोक रस देल पानि पीआउ, पछाइत बुझल जेतैक।”

जहिना मनोहर भाय बजला तहिना पत्नी मन्दाकिनी नेबोक रस देल पानिक गिलास घरसँ आनि मनोहर भाइक हाथमे धरा देलखिन। मनोहर भाइक मन तबधल रहबे करैन, एक्के साँसमे गिलासो भरि पानि पीब लेलाह। पानि पीलाक पछाइत मन असथिर भेलैन। असथिर होइते विचार उठलैन जे पहिने अपन घटित घटना पत्नीकेँ कहि देब उचित हएत। परिवार हुअ कि समाज, सभ अपन-अपन दायित्वक जवाबदेह होइते अछि, बजला-

“की कहू, औझुका दिने खराब अछि।”

पतिक मुहसँ ‘औझुका दिने खराब अछि’, सुनि मन्दाकिनी

छगुन्तामे पड़ि गेली। छगुन्तामे ई पड़ली जे दिनो खराब होइए, एहेन विचार मनमे गड़बे ने केलैन। मनमे उठि गेलैन जे जहिना आन दिन सुर्ज उगि अपन रास्ता पकैड़ चलैत-चलैत अस्त होइ छैथ तहिना तँ आइयो भोरमे उगि चलिये रहला अछि, तखन दिन केना खराब अछि। सुबुध कक्काक समाचार सुनि जहिना मनोहर भाय असमंजसमे पड़ल छला तहिना पतिक विचार सुनि मन्दाकिनी असमंजसमे पड़ि गेली। जइसँ दुनूक बीच चुप्पा-चुप्पी पसैर गेल। ने मनोहर भाय किछु बाजि रहल छला आ ने मन्दाकिनी किछु बाजि रहल छेली। मुदा दुनूक मनमे, माने जहिना मनोहर भाइक मनमे सुबुध कक्काक सामाचार औंढ़ मारि रहल छेलैन, तहिना मन्दाकिनीक मनमे सेहो पतिक विचार औंढ़ मारए लगलैन।

अपन चुप्पी तोड़ैत मन्दाकिनी बजली-

“की कहलिऐ जे औझुका दिने खराब अछि?”

मनोहर भाय बजला-

“पनरहम दिन जे बजार जा कऽ चीज-वौस किनने रही तही हिसाबे दाम जोड़ि पाइ लऽ कऽ आइयो बजार गेल छेलौं मुदा जखन दोकानपर बैस दोकानदारकेँ दाम सभ पुछलयैन तखन एकोटा वस्तु नहि बँचल जेकर दाम बढ़ल नहि छल। सभ वस्तुक दाम बढ़ब सुनि मन छटपटा गेल जे आब की करब.! पाइ जे जोड़िकऽ अनने छी तइ हिसाबे सभ वस्तु केना पूरत?”

पतिक विचार मन्दाकिनी धियानसँ सुनि बजली-

“तखन की केलिऐ?”

मनोहर भाय बजला-

“तखन की करितौं, जँ किछु वस्तु पुराकऽ लऽ लइतौं तँ किछु वस्तु छुटि जाइत। उधारीक कारोबार तँ कहियो केलौं नहि, तँए

उधारी केना लइतौं।"

बिच्चेमे मन्दाकिनी बजली- "तखन?"

मनोहर भाय बजला- "जहिना परिवारक होशगर भनसिया वस्तुक दाम बढ़ने या तँ वस्तुमे कटौती करै छैथ वा वस्तुक स्तरमे कटौती करैत पार-घाट लगबै छैथ, सएह केलौं। जेहेन वस्तुक उपयोग सभ दिन करैत आबि रहल छी तइमे कटौती नइ केलौं, मुदा मात्रामे कटौती तँ करबे केलौं।"

महगाइपर मन्दाकिनीक नजैर नहि टिक दौड़ गेलैन परिवारक खर्चपर। बजली- "जखन खर्चक हिसाबसँ वस्तु कम अनलौं तखन पार केना लगत?"

मनोहर भाइ बजला-

"जहिना मुट्ठिया चाउर वा दालि बँचा कऽ भनसिया ओहन दिनले जमा करै छैथ जइ दिनक खर्च नइ रहै छैन, तहिना अहूँ करब। ओना, एकटा उपाइ आरो अछि जे पनरह दिनक खर्चक हिसाबसँ तेरहे दिनक भेल तँए पनरहम दिनक बदला तेरहमे दिन पुन: बजार जाए पड़त।"

मन्दाकिनी बजली- "से एना किए दाम बढ़ल? देखै छी जे ने कोनो देशक बीच लड़ाइ भेल अछि, ने रौदी-दाही भेल अछि आ ने कोनो आफदे-असमानी भेल अछि तखन वस्तुक दाम किए बढ़ल?"

मनोहर भाय बजला- "एतबो ने बुझै छिऐ जे बजैकाल लोक किछु बजैए आ करैकाल किछु करैए।"

पतिक बात सुनि मन्दाकिनीक मनमे शंका भेलैन जे एना किए पति बाजि रहला अछि। हम तँ वएह बात बजै छी जे करै छी वा जे करै छी सएह बजै छी, तखन किए एहेन बात बजला अछि? पुछलखिन- "से केना?"

मनोहर भाइक मनमे उठलैन जे अवसर एलापर मुँहकेँ चुप राखब, चुकब हएत। बजला-

“एतबो ने बुझै छिऐ जे सस्ती-महगी केना अबैए।”

मन्दाकिनीक विचार अखन तक ओइ सीमापर नहि पहुँचल छेलैन जइ सीमापर सस्ती-महगी आबि जाइए। मन्दाकिनी बजली-

“केना अबैए?”

मनोहर भाय बजला-

“ई बुझल अछि किने जे अपन देश किसानक देश छी?”

बिच्चेमे मन्दाकिनी बजली-

“हँ, से तँ बुझल अछिए जे भोजने दाताटा किसान नहि छैथ, पूर्ण जीवनदाता सेहो किसाने छैथ।”

पत्नीक सुढ़ियाएल विचार सुनि मनोहर भाय बजला-

“जे वस्तु किसान खेतमे उपजाबै छैथ वएह वस्तु बेपारी कीनिकऽ अपन गोदाममे जमा कऽ लइ छैथ आ जखन किसानक उपजौल वस्तु गोदाममे जमा भऽ जाइए, तखन ओइ वस्तुक मालिक बेपारी भऽ जाइ छैथ।”

पतिक विचार मन्दाकिनीक मनमे नीक जकाँ नहि चुभलैन तँए बजली-

“किसानक उपजौल वस्तुक मालिक बेपारी किए भऽ जाइ छैथ?”

पत्नीक प्रश्न सुनि मनोहर भाय मने-मन विचार केलैन जे सोझ डारिये नहि बुझती, तँए खरिआरि-खरिआरिकऽ बुझबए पड़त, मनोहर भाय बजला-

“देखै छिऐ ने जे गाममे बेसी लोक ओहने छैथ जिनका अपना

खेत-पथार कम छैन वा नइ छैन, मुदा परिवारमे खर्च तँ छैन्हे। किछुए किसान ने एहेन छैथ जिनका अपना खर्चसँ बेसी उपज होइ छैन। हुनकर जे बेसियाहा उपज होइ छैन ओ बेपारी सभ कीनिकऽ अपना गोदाममे रखि लइ छैथ आ जखन गामक लोकमे वस्तुक अभाव होइ छैन तखन कीनैले बाजार जाइ छैथ। जेकरा बेपारी सभ अपन मेहनतनामा कहि डेढ़िया-दोबर दामपर दइ छैन। वएह कारण सस्ती-महगीक छी।”

पतिक बातकेँ मन्दाकिनी मने-मन विचारए लगली। किछु विचार तँ बुझिमे आबि गेलैन मुदा किछु विचार एबे ने केलैन, तँए ऊपर-निच्चाँ देखए लगली...।

पत्नीकेँ चुप देखि मनोहर भाय बजला- “अखन नहाएब-खाएब नहि, पहिने सुबुध काका ऐठाम जाएब, हुनका देखब जरूरी अछि।”

पाशा माने विचारक पाशा, बदैलते मन्दाकिनीक मन सेहो हल्लुक भेलैन। हल्लुक होइते बजली-

“खेला-पीला पछाइत सुबुध काका ऐठाम जाएब, से नहि हएत?”

मनोहर भाय बजला-

“हएत किए ने। मुदा जाबे गाममे नहि छेलौं ताबेक स्थिति किछु आरो छल मुदा जखन गाम आबि सुनलौं, तखुनका स्थिति बदैल कऽ दोसर भऽ गेल।”

“से की?” –मन्दाकिनी पुछलकैन। मनोहर भाय बजला-

“गाममे नहि रहने भेँट नहि करितिऐन तखन कहैले तँ हेबे करैत जे गाममे नहि रहने बुझबे ने केलौं, जे कारण एकविचार होइत मुदा जखन गाम आबि बुझलौं तखन जँ भेँट करैसँ पहिने खाए-

पीबए लगल, तखन तँ ई अकारण विचार भऽ जाएत।”

मन्दाकिनी-

“से केना?”

मनोहर भाय बजला-

“लोककेँ अपन-अपन विचारो होइए आ काजो होइए। कियो खेनाइ-पीनाइकेँ आन जरूरतसँ बेसी महत्व दइ छैथ आ कियो आन जरूरतकेँ खेनाइ-पीनाइसँ बेसी महत्व दइ छैथ। अखनुका जे स्थिति अछि तइमे अपन दायित्व बनैए जे पहिने सुबुध काका ऐठाम जा हुनकासँ भेँट करिऐन। अहीं कहलौं हेन जे ओ बताह भऽ गेला अछि। तैठाम हमरा भेँट केलासँ जँ बतहपनी दूर भगेबाक कोनो उपाइ भेँट जाए तँ ओ बेसी नीक हएत किने।”

पतिक विचारकेँ मन्दाकिनी चुपचाप सुनि लेली, बजली किछु नहि मुदा मनमे उठिये रहल छेलैन जे खाइ-पीबैक तेहेन घेरा लगि गेल जे अपने सेहो पछुआ जाएब। मुदा पुरुखक पुरुखपन विचारकेँ रोकबो उचित नहियेँ हएत। तहूमे दुनू गोरे, माने सुबुध काका आ अपने, माने पति, भरि दिनमे दूबेर-तीनबेर नहि तँ एकोबेर एकठाम बैस घन्टा-दू-घटना गप-सप्प करिते छैथ, तैठाम किछु बाजब केहेन हएत।

मनोहर भाय जहिना बाजारसँ आएल छला तहिना सुबुध काकासँ भेँट करए विदा भेला। दरबज्जासँ निकैल जखन मनोहर भाय सड़कपर एला तखन मनमे उठलैन जे पत्नी केकरो मुहेँ सुनल बात कहली आकि आँखिसँ देखल कहली, से तँ पुछबे ने केलिऐन। गामे छी रंग-बिरंगक लोक अछिए। कियो तिलकेँ ताड़ बना बजैए आ कियो ताड़केँ तिल बना दइए। तँए नीक हएत जे कोनो बहन्ना बनाकऽ सुबुध काका ऐठाम जाएब बेसी नीक।

मनोहर भाइक घरसँ थोड़बे दूर, माने चौथाइ किलोमीटर हटल सुबुध कक्काक घर छैन।

खेला-पीलाक पछाइत सुबुध काका आने दिन जकाँ दलानक ओसारक चौकीपर आराम कऽ रहल छला। बहतपन्नीक कोनो लक्षण मनोहर भायकेँ नहि बुझि पड़लैन, मुदा जखन पहुँच गेला तँ चोट्टे घुमियो जाएब उचित नहि बुझि दलानपर पहुँच सुबुध काका लग बैसकऽ बजला-

“काका, बजारमे आगि लगि गेल अछि।”

सुबुध काका गम्भीर विचारक लोक छथिए, मने-मन बुझि गेला जे भरिसक महगाइक दुआरे मनोहर बाजल अछि। सुबुध काका बजला-

“देशेमे आगि लगल अछि। तेहेन-तेहेन आ तेते मदारी सभ फड़ि गेल अछि जे भरि दिन कोनो-ने-कोनो नाच करिते रहैए।”

ओना, मनोहर भाय ऐ ताकमे छला जे जँ कनियोँ बतहपनी सुबुध काकामे प्रवेश केने हेतैन तँ बाजबसँ बुझिमे आबिए जाएत। मुदा से भेलैन नहि। आगू भऽ कऽ किछु पुछब मनोहर भाय नीक नहि बुझि रहल छला, किए तँ कोन बात आगू भऽ कऽ बाजक चाही आ कोन बात नहि बाजक चाही से मनोहर भाय सुबुधे काकासँ सीखने छैथ, तँए सुबुधे कक्काक विचारकेँ दोहरबैत मनोहर भाय पुछलखिन-

“की कहलिऐ काका, मदारी नाच?”

मनोहर भाइक विचार जइ मदारीपर छेलैन तइसँ हटि सुबुध काका बजला-

“आन मदारीक कोन बात जे घरेक मदारीक बात कहै छिअ। देखिते छहक जे अपन मुँहक आधासँ बेसी दाँत टुटि गेल अछि।

परसुखन सेहो एकटा टुटल। दाँतकेँ ते फेक देलिऐ मुदा ओकर दढ़[2]पर घाव अछिए। आठ बजे भिनसरमे जहिना सभ दिन जलखै करै छी तहिना आइयो जलखै करए आँगन गेलौं।"

अपना फुरने सुबुध काका बाजि रहल छला, जे मनोहर भाइक मनमे नीक जकाँ गड़िये नहि रहल छेलैन तँए उखड़ल-उखड़ल सन मुँहक रूखि बनियेँ रहल छेलैन। मनोहर भाइक मुँहक रूखिकेँ अँकैत सुबुध काका बजला-

"मनोहर, असल बात आब कहै छिअ।"

असल आ कमअसल बातमे अन्तर होइते अछि। असल बात सुनि मनोहर भाय आँखि-कान ठाढ़ केलैन। मनोहर भाइक जिज्ञासा देखि सुबुध काका बजला-

"जखन जलखै करए बैसलौं तखन पुतोहुजनी तेहेन रोटी-तरकारीक थारी नेने आनिकऽ आगूमे रखली जे एको कौर खेबामे असोकर्ज हुअ लगल।"

मनोहर भाय बजला-

"की असोकर्ज?"

सुबुध काका बजला-

"तोरा अखन एकोटा दाँत नहि टुटलह हेन तँए जनेर हुअ कि बाजरा आकि मड़ूएक टाँट[3] रोटी, नोन-मेरचाइक संग तीनू जेहेन सुअदगर लगतह तेहेन हमरा सन बिनु दाँतबलाकेँ थोड़े लागत। ने दाँतसँ काटल हएत आ ने मसूहैरसँ चिबौल हएत।"

सुबुध कक्काक विचार सुनि मनोहर भाय बेवहारिक रूप तँ

---

[2] **जगह**

[3] **कड़गड़**

नहि मुदा वैचारिक रूपमे अनुमान करैत बजला-

“हँ, से तँ नहियेँ हएत। तइले नीक हएत जे कड़गड़ नहि नरम ताकक रोटी बनल रहत, सएह नीक हएत। तइमे एकटा रास्ता आरो अछि जे ओइ रोटीकेँ पानिमे कनी काल फुला देबै तखन ओ अपने नरम भऽ जाएत।”

ओना, मनोहर भाइक विचार सुबुध काकाकेँ सेहो जँचलैन मुदा से तँ केने नहि छला। विचारकेँ अगुअबैत बजला-

“मनोहर, तोहूँ नीके विचार देलह, मुदा जे भेल से कहै छिअ।”

बिच्चेमे मनोहर भाय बजला-

“जे भेल सएह ने कहब। विचारक दौड़मे तँ बहुत नीको अछि आ बहुत अधलो तँ अछिए। मुदा फलाफल तँ भेलहेक ने होइए।”

सुबुध काका बजला-

“मनोहर, परिवारमे सभकेँ सबहक जीवनक नीक-बेजाएक जानकारी राखब जरूरी अछि। जँ से नहि रहत तँ केकरो नीक हएत तँ केकरो अधलो हेबे करत।”

सुबुध कक्काक विचार मनोहर भायकेँ जँचलैन, तँए सूहकारैत[4] बजला-

“हँ, से तँ हेबे करत।”

मनोहर भायकेँ सूहकारिते सुबुध काका बजला- “आइ यएह भेल छल। पुतोहुजनी तेहेन टाँट रोटी बना नेने छेली जे मुँहमे गड़बो करै छल आ चिबाएलो ने होइ छल। एक तँ पेटक आगि भूखसँ लहलह कऽ रहल छल दोसर पुतोहुक नासमझी, तँए मन बेपीड़ित भऽ गेल।”

---

[4] **स्वीकारैत**

ऐगला विचार बिनु बुझनहि मनोहर भाय बजला-

“उचिते भेल छल किने।”

मनोहर भाइक विचारक सह पेबिते सुबुध काका बजला-

“थारीपर सँ उठि पुतोहुकेँ कहलयैन, जेहने कुल-खनदान रहत तेहने ने लुरियो-बुधि हएत।”

सुबुध कक्काक विचार सुनि मनोहर भाइक मुहसँ हँसी निकैल गेलैन। मनोहर भाइक हँसी सुबुध काकाकेँ आरो अगिया देलकैन। बजला-

“जहिना अपने पुतोहुकेँ चेतबैत कहलयैन तहिना ओहो उनटबैत बजली, हमर तकदीर फुटि गेल तँए एहेन खनदानक परिवारमे एलौं जे दिन धुनै छी।”

मनोहर भाय बजला-

“सुतृष्ण घरमे नहि छला जे एना विचार बढ़ल?”

सुबुध काका बजला-

“ओहो अँगनेमे छल, वएह ने बाजल जे अहाँ बताह भऽ गेलौं।”

मनोहर भाय मने-मन विचारए लगला जे भरिसक सुतृष्णोक माने बेटेक बात गाममे पसैर गेल। की एहेन पसरबकेँ अकारण कहब आकि कारण? बजला-

“अनेरे विवाद परिवारमे बढ़ि गेल।”

मनोहर भायकेँ झपटैत सुबुध काका बजला-

“मनोहर, कोनो काजे कि विचारे अकारणो होइए आ सकारणो तँ होइते अछि। अकारण विचार वा काज आधारहीन होइए, जे असत्य सेहो भेल मुदा जइ विचार वा काजक आधार

होइए, वएह सत्य छी। तँए सत्यकेँ पकड़ैले आधारक जरूरत अछिए।”

सुबुध कक्काक विचारसँ सहमत होइत मनोहर भाय बजला-

“हँ, से तँ अछिए।”



शब्द संख्या : 1918, तिथि : 18 मई 2022

अछोप

केतेको सालक पछाइत ऐबेरक बैशाखक लगन[5] फागुनक लगनकेँ दाबि अपन झण्डा फहरौलक। माने ई जे आन साल मध्यमास रहने फागुनमे बिआहो-दुरागमन आ मुड़नो-उपनैन बेसी होइ छल मुदा से ऐबेर नहि भेल। बैशाखक आगू फागुन बौना पड़ि गेल।

ओना, बैशाखक लगन ओहिना नहि बीस भेल, बीस होइक अनेक अनुकूल कारणो भेल। पहिल कारण भेल जे समय-समयपर चारिटा बरखा सेहो होइत रहल जइसँ बैशाखक जे अपन अगिपन[6] छल तइमे कमी आनि आनि मासक मौसमकेँ सुहावन करैत रहल। आन साल से नहि होइ छल, माने गोटे साल गोटे बरखा होइतो छल आ नहियोँ होइ छल, जइसँ बैशाख खढ़मास बनि जाइ छल तँए पैघ काज माने कोनो यज्ञ करैमे बाधक बनियेँ जाइ छल। तँए कहब जे बैशाखक लगन सोल्होअना फोंके भऽ जाइ छेलै सेहो बात नहियेँ छल, तखन तँ फागुनक हिसाबे कम यज्ञ काज जरूर होइ छल। दोसर अनुकूल कारण भेल जे कोरोनाक चलैत जे पैछला दुनू सालक यज्ञ घेराएल छल ओ एकाएक छुटकारा पबिते, तीनू सालक यज्ञक मुहूर्त सेहो बनि गेल। तइसँ यज्ञ-जापमे बढ़ोत्तरी सेहो भेल।

परम्परासँ अबैत गाम-गाममे किछु बेवहार टुटबो कएल वा

[5] **लग्न**

[6] **उष्णता**

कमबो कएल आ किछु नव बेवहार उठिकऽ ठाढ़ सेहो भेबे कएल अछि। माने ई जे परम्परासँ अबैत बिआह-दुरागमन हुअ आकि मुड़न-उपनैन, सामाजिक भोज-भात हुअ कि बरियातीक, ऐ सभ काजमे जे समाजक सहयोग एकटा चलैन जकाँ छल, तइमे बदलाव एबे कएल अछि। आब समाजसँ कटि बेकतीगत रूपमे भोज-भातक चलैन आबि गेल अछि। माने ई जे गाम-गाममे भोज्य-विन्यास (भानस) बनबैक नव रोजगार उठिकऽ ठाढ़ भेल अछि। ओना, से नीको भेल अछि आ कनी-मनी अधलो तँ भेबे कएल अछि। नीक ई भेल अछि जे काज असान भेल आ अधला ई भेल अछि जे सामाजिक सरोकारमे ह्रास सेहो भेबे कएल अछि। खाएर जे अछि, कहलो गेले अछि- ‘जिनका पति मानथि सएह सोहागिन.!’ समाज जेकरा मानैथ वएह काज नीक भेल।

शुरूहे बैशाखसँ माने जुड़ेशीतल पाबैन दिनसँ मासक चलती आबि गेल। एक दिस घन-घनौआ लगन आ दोसर दिस जुड़शीतलसँ शुरू भेल पबैन-तिहारसँ लऽ कऽ जानकी-नौमी होइत मासक अन्त बुद्ध पूर्णिमा दिन आबिकऽ पूर्ण चलतीक संग विसर्जन भेल। नेपालक सुदूर गाम लुम्बिनी जे हारल-मारल अखन तक पड़ल छल से जागिकऽ ठाढ़ो भेल आ तीर्थ-स्थल सेहो बनि गेल। ऐठाम ई नहि बुझब जे बुद्धदेव मध्यमार्गीय विचारवान पुरुष छला जे बहुजनक हितकेँ अँखिया अपन विचार निरूपित केलैन। ऐठाम एतबे बुझू जे बुद्धक जन्म, जन्मक सिद्धि आ प्रयाण पूर्णिमे-के भेलैन।

अपन सासुरमे सेहो सारक बेटीक बिआह छेलैन। वएह समाद पठौलैन जे अहाँ गाममे नीक पाक-मास्टर माने भोज्य-विन्यास बनबैक कारीगर छैथ, तिनका कनी ठीक कअ दिअ।

ओना, आन-आन कारीगरसँ, सोहनलालक चार्ज अधिक अछिए। जैठाम पाँच हजार आन-आन मिस्त्रीक चार्ज एक लगनक

माने एक दिनक अछि तैठाम सोहनलालक चार्ज दस हजार अछि। तीन गोरेक मेड़िया बनौने अछि, बाँकी दुनू गोरेकेँ दू-दू हजार आ अपने छअ हजारक कमाइ सोहनलालकेँ होइ छैन। ऐ बेरक बैशाखमे लाखसँ ऊपरेक कमाइ भेबे केलैन।

सोहनलाल कारीगर ऐठाम जाइत रही कि बिच्चेमे रामखेलौन भाय भेटला। अपने उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ जाइत रही आ रामखेलौन भाय दच्छिनसँ उत्तर मुहेँ अबै छला। रस्ताक कातेमे एकटा खूब झमटगर आमक गाछ अछि। ओहीठाम दुनू गोरेक भेँट भेल। भेँट होइते रामखेलौन भाय बजला-

“केते दिनक पछाइत आइ तोरासँ भेँट भेल मकशूदन.!”

अपनो उनैट कऽ पाछू दिस तकलौं माने पैछला भेँट मोन पाड़ए लगलौं तँ मोन पड़ल जे औझुके पनरहम दिन दुनू गोरेकेँ एक-दोसरसँ भेँट भेल रही..।

एक पनरहिया कहियौ कि एक पख, माने पक्ष, पर आइ दुनू गोरे आमने-सामने भेलौं अछि। ओना, दुनू एक रहितो दू छीहे। पनरहियाक माने भेल पनरह दिन आ पखक माने भेल अन्हरिया इजोरिया पख वा पक्ष।

बजलौं-

“भाय, मास तँ नहि लागल माने भेँट होइमे मुदा एक पनरहिया तँ भइये गेल अछि।”

रामखेलौन भाय बजला-

“अखन बेसी अगुताएल तँ नहि ने छह मकशूदन, किएक तँ पनरह दिनक काज-उदमक गप-सप्प पछुआएल अछि। ओकर जखन मुँह मिलानी कऽ लेब तखन ने आइसँ फेर नब जीवनक शुरूआत हएत।”

बजलौं- “हँ, से तँ हेबे करत।”

अपना दिस, माने अपन काज दिस जखन उनैट कऽ तकलौं तखन मोन पड़ल जे पाँचमे दिन सरबेटी[7]क बिआह छी, आइयो जँ कारीगरसँ गप-सप्प नहि कऽ लेब तखन काजमे बाधो भऽ सकैए। लगने-पातीक दौड़ छी, दिन घटने जँ नहि हएत, माने दोसरठामक काज गछि नेने हएत, तखन तँ काजमे विथुत हेबे करत। मने-मन विचारिये रहल छेलौं कि रामखेलौन भाय बजला- “भने गाछक छाहरियो अछिए, अहीठाम बैस गपो-सप्प करब आ तमाकुलो खा लेब।”

ओना, अपन मन कछमछाइये रहल छल जे पाँचे दिन बाँकी अछि, अखन तक कारीगर ठीक नहि भेल अछि, जँ कहीं नहि भेल तखन तँ अनेरे सासुरमे बेपाइन हएब जे एहेन रही तँ कोनो यज्ञ-जपक क्रियाक भार उठेबे ने करी। दोसर दिस ईहो हुअए जे जखन दुनू गोरे एक समाजक छी, माने अपनो आ रामखेलौनो भाय, तखन जँ पनरह दिनपर भेँट भेलो पछाइत कुशल-छेम, हाल-चालक गप-सप्प नहि करब तखन सामाजिकता की भेल? मने-मन विचारिये रहल रही कि गर भेटल। गर भेटते बजलौं-

“भाय, अहाँ बेसी अगुताएल नइ ने छी, किए तँ पनरह दिनक गप-सप्प पछुआएल अछि तइ पुरबैमे कनी देरी लगबे करत।”

जहिना अपने बजलौं तहिना रामखेलौन भाय उत्तर दैत बजला- “जखन जीवने छी, तहूमे मनुक्खक, तखन हजारो रंगक चिन्ता-फिकीर तँ रहबे करत किने। मुदा समाजसँ भेँटो-घाँट आ गपो-सप्पक तँ अपन महत्व अछिए। तँए जखन दुनू भाँइ एकठाम भेलौं तखन किए ने राजनीति पार्टीक सदस्य जकाँ वा गाड़ीक

---

[7] **सारक बेटी**

ड्राइवर जकाँ अपन भेँटक नवीकरण कइये लेब नीक।”

बजलौं- “भाय, चलिते-चलिते गपो-सप्प करब आ तमाकुलो खाएब, किए तँ सोहनलालसँ भेँट करब जरूरी अछि।”

जहिना बजलौं तहिना रामखेलौन भाय सूहकारिकऽ झुमैत बजला-

“चलू सखी ओतइ चलू। जेतए मिलैथ ब्रजराज।

गोरस बेचए हरि मिलैथ, एक पंथ दू काज।”

रामखेलौन भाइक मनक उद्गार देखि अपनो मन उद्गरित भऽ गेल। बजलौं-

“भाय, मन बड़ मधुआएल अछि, केतौ किछु भेटल अछि की?”

गप-सप्प करिते, रस्तो कटि रहल छल, बिच्चेमे रामखेलौन भाय तमाकुल सेहो चुना लेलैन। कनी रूकैत आँगुरसँ तमाकुलक जूम बनबैत बजला-

“पहिने तमाकुल खा लएह। पछातिक काज पछाइत हेतइ। जखन काज करए विदा भेल छी तखन कनी नरम कि कनी गरम, काज कइये कऽ ने छोड़ब।”

तैबीच अपने तमाकुल मुँहमे लऽ नेने छेलौं। कनी-कनी अपन रंग तमाकुल देखबए लगल छल, रस्ता सेहो कटि गेल। सोहनलाल दरबज्जेपर देखि पड़ल। सोहनलालकेँ देखिते रामखेलौन भायकेँ कहलयैन-

“भाय, यात्रा शुभ अछि।”

जेना रामखेलौन भाइक ठोरेपर जवाब तैयार रहैन तहिना बजला- “अशुभ काज करैमे ने अशुभे-अशुभ सदिकाल होइए मुदा

शुभ काज तँ से नहि छी। ओइमे सदिकाल शुभे-शुभ होइक सम्भावना रहिते अछि।"

सड़केपर सँ बजलौं-

"बहुत दिन जीबह सोहन। तोरे चर्च दुनू भाँइ करैत आबि रहल छेलौं।"

लोकक बीचमे रहनिहार सोहनलाल अछिए, तँए बजै-भुकैक ताल-मात्रा बुझिये रहल अछि। बाजल-

"गरीब लोकक दरबज्जापर बैसबै, चाह पीबै, पान खेबै तखन ने ओकर जिनगी नमहर हेतइ।"

सोहनलाल अपनोसँ गप-सप्प करैत रहए आ आठ बर्खक अपन बेटी तेतरीकेँ सेहो कहलक-

"बुच्ची, अभ्यागत सब एला अछि, जेते जल्दी हुअ चाह बनाकऽ दरबज्जापर नेने आबह।"

तीनू गोरे दरबज्जापर बैसलौं। बैसते बजलौं-

"सोहन, एक दिनक काज तोहर अछि।"

सोहनलाल बुझि गेल जे लगन चलि रहल अछि, तँए काज हेतैन। सोहनलाल बाजल-

"केहेन काज अछि?"

बजलौं-

"सासुरमे बिआह छी, तहीमे एक दिन समय दएह।"

सोहनलाल बाजल- "कहिया?"

"पाँचम दिन।"

पाँचम दिन सुनिते सोहनलाल सहैम गेल। तइसँ बुझि पड़ल जे

भरिसक काज गड़बड़ा गेल। अपनाकेँ सम्हारि सोहनलाल कहलक-

“मकशूदन भाय, ओना पाँचम दिनक काजक अश्वासन एक गोरेकेँ देने छिऐन, मुदा काल्हि साँझ धरिक समय सेहो कहने रहिऐन जे लगन-पातीक समय छी, तँए समयपर दू हजार वेना देब तखने काज पक्का हएत। से अखन तक नहि ऐला अछि।”

काजक खटमिट्ठी देखि रामखेलौन भाय सोहनलालकेँ कहलखिन- “सोहन, जखन वेनाक समय उनैह गेल तखन तोहर कोनो दोख नहि। मकशूदनसँ एडभान्स लऽ लएह आ हिनकर काज गछि लहुन।”

सोहनलाल बाजल-

“बीचमे जखन अहाँ छी रामखेलौन भाय, तखन मुहसँ नहियोँ केना निकलत।”

दू हजार रुपैआ सोहनलालकेँ वेना दैते मन हल्लुक भेल। मन हल्लुक होइते गाम दिस नजैर बढ़ल कि किशोरीलाल कक्काक बेटा दिनेशक बिआहपर गेल। जहिना गाममे सभसँ बेसी नगदक लेन-देन तहिना झमटगर बरियातीक बात सेहो किशोरीलाल कक्काक पक्का भेलैन। बजलौं-

“रामखेलौन भाय, किशोरीलाल कक्काक बेटाक बरियाती कहिया जेबइ?”

रामखेलौन भायकेँ बुझल जरूर रहल हेतैन, किए तँ एक गामेक नहि एक्के टोलक काज सेहो छी, मुदा तेकरा धकियबैत रामखेलौन भाय बजला- “हमरा कोनो जनतब नइ अछि।”

रामखेलौन भाइक बात सुनि मन मानैले तैयारे ने भेल। एहनो बात मानल जाए जे एक गामक कोन बात जे एक टोलक आ तहूमे एक जातिक एहेन झमटगर एते पैघ बिआह-यज्ञ छी, आ रामखेलौन

भाय बाजि रहला अछि जे हमरा कोनो जनतब नइ अछि। भरिसक मजाकमे बात छिपा रहला अछि। बजलौं-

"भाय, माछ-मौस रसगुल्ला-लालमोहन अहीं खाएब, हमरा नइ देब, तइले बात छिपबै किए छी।"

रामखेलौन भाय बजला-

"मकशूदन, तोरा लग कहियो झूठ बजलौं हेन, छह कहियोक मोन। धरमागती पूछह तँ कोनो जानकारी अपना नइ अछि।"

रामखेलौन भाइक विचारकेँ झुठिऔलो नहियेँ जा सकैए मुदा सत्यक अन्वेषणो करब तँ जरूरी अछिए। पुछलयैन-

"अहाँकेँ कोनो जानकारी नहि अछि?"

"नहि।" -रामखेलौन भाय बजला।

तैपर लगले पुछलयैन-

"जानकारी किए ने अछि?"

जेना हजारो बर्खक इतिहास रामखेलौन भाइक मनमे नाचि उठलैन तहिना बजला-

"मकशूदन, जातिक बीच सेहो अनेको जाति अछि। ऊपरसँ आन एक्के जाति बुझै छैथ मुदा जाति-जातिक भीतर तेहेन बान्ह सभ पड़ल अछि जे एक-दोसरकेँ अछोप मानि बेवहार करैए।"

विचारक क्रममे तँ रामखेलौन भाइक भावनाक भाँज लगि गेल मुदा बेवहारमे अनसोहाँत लगबे कएल। पुछलयैन-

"भाय, अहाँक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।"

दिल खोलिकऽ रामखेलौन भाय बजला-

"एक जाति रहितो हमरा सभकेँ किशोरीलाल अछोप बुझै छैथ, तहिना हमहूँ सभ हुनका अछोप बुझै छिऐन। जहिना ओ हमरा

सभसँ खेबा-पीबाक कोनो सम्बन्ध नै रखने छैथ तहिना गाममे बीस परिवारक टोल हम सभ छी, माने समाजक नजैरमे एक जाति, तइमे दस परिवार हुनको सभक ऐठाम नइ खाइ-पीबै छी। अपन दसो घरक एक बेवहार अछि।"

रामखेलौन भाइक विचार सुनि छुब्ध भऽ गेलौं। मुहसँ निकैल गेल-

"सएह.!"

रामखेलौन भाय बजला-

"भऽ सकैए तोरा नइ बुझल हेतह मकशूदन मुदा सवा लाख तक जातिमे जाति, एक जातिक बीच अछि। जइमे एक-दोसरक बीच छुत-अछूतक बेवहार सेहो अछिए।"



शब्द संख्या : 1590, तिथि : 21 मई 2022

अप्पन बेइमानी

धर्मपुर गाममे गुरुचरण बेछप किसान छैथ। ओना, गामे छी तहूमे मिथिलाक गाम जैठाम सभ अपनाकेँ किसानेक गामक लोक बुझिते छैथ। भलेँ ओ पाँचे-दस कट्ठाक लोक किए ने होइथ। पाँच-दस कट्ठासँ लऽ कऽ पचास-साए बीघा जमीनक जोतबला सभ अपनाकेँ किसाने बुझबो करै छैथ आ अप्पन मान्यता सेहो रखनहि छैथ। तही बीच पाँच बीघा जमीनक जोतबला किसान गुरुचरण सेहो छैथ।

ओना, गुरुचरणकेँ पिताक देल माने पिताक अरजल जमीन छिऐन, मुदा तेकरा गुरुचरण समुचित उपयोग करैत अपन परिवार चलबैत आबि रहल छैथ। पिता, माने गुरुचरणक पिता विवेकलाल, जहिये जमीन उपार्जन करए लगला तहिये मनमे आबि गेल छेलैन जे जमीन जाले नहि महाजाल सेहो छीहे, तँए ओइसँ बँचिकऽ तखने रहि सकै छी जखन अपन सभ जमीन एकठाम रहत। जेकरा दोसर शब्दमे चकबन्दी सेहो कहै छिऐ।

जखन विवेकलालमे आर्थिक उठाइन एलैन, तखन जे जमीन सभ कीनए लगला ओ अपने आड़ि-पाटिमे कीनलैन। ओना, शुरूमे नानाक दोखतरी दस कट्ठा जमीन पइर लगलैन जेकरा बेचिकऽ एक्केबेर डेढ़ बीघा खेत कीनलैन। तइसँ पहिने अपना मात्र दू कट्ठाक घराड़ीटा रहैन। कहब जे दस कट्ठा बेचिकऽ डेढ़ बीघा खेत केना कीनलैन?

गाम-गामक जमीनक दरो (दामो) आ नापो-जोखमे अन्तर अछिए। मात्रिकक लग्गो नमहर आ जमीनक मूल्यो बेसी तँए दस कट्ठा बेचिकऽ डेढ़ बीघा जमीन गाममे कीनलैन। जखन डेढ़ बीघा अप्पन जमीनक पूजी भऽ गेलैन तखन मनमे किसान परिवारक बीच आगू बढ़ैक विचार सेहो जगलैन। जइसँ दुनू परानी दिन-रातिकेँ एकबट्ट करैत जीतोड़ मेहनत करए लगला आ साले-साल पाँच-दस कट्ठा जमीन सेहो कीनए लगला जइसँ पाँच बीघा जमीन पूरि गेलैन।

माते-पिताक देखा-देखीसँ दुनू परानी गुरुचरण सेहो संग पूरए लगलैन, जइसँ सुगमता पूर्वक परिवार चलए लगलैन। ओना, बाढ़ि-रौदीक क्षेत्र मिथिला छीहे, मुदा ओ सभ साल नहि, बीच-बीचमे गोटे-गोटे साल होइए।

एकठाम अपन जमीन भेने विवेकलाल पाँचो बीघा जमीनकेँ नमहर आड़ि माने चौड़गर-ऊँचगर हाता ई सोचि दऽ देलैन जे भविष्यमे, माने आगू कहियो जमीनक नापी-जोखीक प्रभाव नहि पड़त। ओना, समाजो तँ समाज छीहे, आइये नहि सभ दिनसँ एहेन बलउमकी जमीनक बीच होइते आबि रहल अछि जे, जे मुँहगर-कन्हगर लोक छैथ ओ मुँहदुब्बरक जमीन धकियबिते आबि रहल अछि। समाजमे कहलो जाइते अछि जे ‘धारक कातक चास आ धनिक लोकक घर लगक बास, एकर कखनो ने बिसवास।’ कखन अछि आ कखन चलि जाएत तेकर कोनो ठीक नहियेँ अछि।

माता-पिताक परोछ भेला पछाइत जखन गुरुचरण अपनाकेँ परिवारक जवाबदेह गारजन बुझए-मानए लगला तखन पिताक देल माने कहल ओ विचार मनमे जागि गेलैन जे अपन जीवनक माने कारोबारसँ लऽ कऽ परिवार चलबै धरिक, जरूरतक सभ औजारो आ वस्तुओ अपन बना लेने केकरोसँ किछु मांगैक जरूरत कहियो नहि रहत, तैसंग ईहो तँ हेबे करत जे जिनका अपना कोनो औजारे

वा वस्तुए नहि छैन तिनका काज करैले सेहो देबैन। गाममे सभकेँ किछु ने किछु खगता रहिते अछि। अपन अधीन जे अप्पन सभ किछु रहत तइसँ समाजक लोककेँ उपकार करैक रास्ता सेहो बनले रहत। जखन मनुक्ख बनि धरतीपर जन्म नेने छी, तखन जँ उपकारी बनि जीवन बेतीत नइ करब तखन जीवनक मोले की रहत।

अप्पन जीवनक सभ साधनक पूर्ति भेने गुरुचरणक जीवन ओहिना चलए लगलैन जहिना पहाड़सँ निकलल बरहमसिया धार अप्पन अनवरत गतिये पहाड़-सँ-समुद्र धरि चलैत रहैए। गुरुचरणक पारिवारिक जीवन सेहो अनवरत गतिये शुरूहेसँ चलैत आबि रहल छैन। जीवनक गतिक अनुकूल गुरुचरणकेँ चारिटा सन्तान सेहो भेलैन। दूटा बेटी आ दूटा बेटा। पहिल सन्तान बेटी भेने दुनू परानी गुरुचरण 'गंगा' नाम रखलैन। जहिना अजामील अप्पन बेटाक नाम नारायण रटि-रटि जीवनमे उद्धार भेला तहिना दुनू परानी गुरुचरण भोरेसँ 'गंगा बेटी..', 'गंगा बेटी..।'क रट लगबए लगइ छैथ। दोसर तेसर बेटा रामधन आ गोबरधन भेलैन आ चारिम बेटी यमुना।

एक-दोसर सन्तानक बीच तीन-चारि सालक अन्तर रहने परिवारमे बाल-बच्चा पोसै-पालैक ओहन समस्या गुरुचरणकेँ कहियो ने एलैन जेहेन समस्या जौंआँ सन्तान वा साले-साले होइबला सन्तानबला परिवारमे होइए। गाम-समाजमे एहेन लीख[8] बनले अछि, माने ई जे जखन चारि बर्खसँ ऊपरक बच्चा भऽ जाइए तखन ओकरा स्कूलमे नाओं लिखौल जाइए आ जखन बिआह-दान करैबला होइए तखन बिआह-दान सेहो करौले जाइए।

समाज हुअ कि परिवार आकि बेकतीगत जीवन, जखन कियो अपन जीवनक अनुकूल अपनाकेँ रमा लइए तँ दुनियाँ-दारीक सभ

---

[8] **रास्ता**

किछु बिसैर जाइते अछि। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी जइमे सभ किछु अछि आ किछु ने अछि। जहिना जनैबला वा करैबलाक लेल सभ किछु अछि तहिना नइ जनैबला आ नइ करैबलाक लेल सेहो किछु ने अछि। तहूमे मनुक्खक जीवन तँ अपने ओहन जटिलो आ शक्तिशालियो अछिए जे करैबला दुनियाँक बीच अपन दुनियाँ रचि निरमबैए आ नइ करैबला सघन दुनियाँक जटिलतामे तेना फँसि जाइए जे अपनो जीवन भार बनियेँ जाइए जइसँ दोसराक आश्रयक खगता सेहो होइते अछि।

पिताक सीख-लिख पकैड़ गुरुचरण समाजमे रहितो परिवारमे तेना रमि गेला जे दुनियाँक सभ किछु आँखिक सोझसँ ओझल भऽ गेलैन आ मनक भीतर मात्र परिवारटा सोझामे रहलैन। परिवार चलबैक दिशामे अपनाकेँ गुरुचरण तेना समाहित कऽ लेलैन जे समयानुसार कहियो एहेन उलझन वा समस्या आँखिक सोझमे नहि बुझि पड़लैन जे अछैते जिनगी प्राण छुटि जाएत। सीमित परिवारक सीमित खगताक बीच अपन संसाधनसँ नीक जकाँ गुरुचरण परवरिस करए लगला। जइसँ पहिल सन्तान गंगाकेँ मिडिल पास केलाक पछाइत, माने बारह बर्खक अवस्थामे समयपर बिआहो केलैन आ तीन सालक पछाइत दुरागमन करा सासुर बास सेहो करौलैन। ऐठाम एकटा बात आरो अछि। ओ अछि जे पहिने माने आइसँ किछु बरख पूर्व बाल-बिआहक चलैन छल जे आब नहियेँ जकाँ अछि। ओना, जहिया बाल-बिआहक चलैन छल तहियो सभ जातिक बीच एकरंग चलैन नहियेँ छल आ अखन जे बदलल वैवाहिक चलैन अछि तहूमे एकरूपता नहियेँ अछि। माने ई जे जहिया बाल-बिआहक चलैन छल तहियो किछु खास जातिमे बाल-बिआहक चलैन नहि छल आ अखन जे बाल बिआहक चलैनमे बदलाव आएल अछि तखनो बाल-बिआहक चलैन अछिए। एहेन

बेवहार खास-खास जातिक बीच अछिए। खाएर जे अछि तइसँ गुरुचरणकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन परिवार आ अप्पन सन्तानसँ।

पहिल सन्तान 'गंगा'क बिआहक पछाइत गुरुचरणक मनमे एते बिसवासो आ आत्मबल सेहो जगिये गेलैन जे, जे परिवेश समाज पैदा केलैन अछि तइमे जँ बेटीक बिआहमे ऋण-पैंच नहि भेल तँ गंगा नहाएबोसँ पैघ कीर्त भइये गेल। ओना, जइ समय समाजक बीच बेटीक बिआह महग नइ छल, माने खर्चक बोझ भारी नहि छल, तहू दिनमे माए-बापक श्राद्ध-कर्ममे समाज लोकक खेत-पथार किरिया-कर्ममे बेचैबते छला, मुदा आजुक परिवेशमे ओहन बेवहारमे कमी एबे कएल अछि। तँए कहब जे माए-बापक श्राद्ध सस्ता भऽ गेल अछि, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए।

गंगाक बिआहक पछाइत गुरुचरण नमहर साँस छोड़लैन। नमहर साँस छोड़ैक कारण भेलैन जे बेटा बिआह तँ आमदनीक अछि मुदा अपन कोखिक अधा-अधी, माने दू बेटीमे एकक, काजक भारसँ निवृत्ति भइये गेलौं। तैसंग ईहो तँ आशा अछिए जे भाइक दायित्व सेहो बहीनिक बिआहक अछिए। ओहुना अछिये जे पिताक देल सम्पैतमे जेते अधिकार बेटाक अछि तेतेक बेटीक सेहो अछिए। जँ हिस्सो भरि सम्पैत बहीनिक बिआहमे खर्च हएत तैयो अपन हिस्सा सम्पैत तँ सुरक्षित रहबे करत। यएह तँ मिथिलाक नारीक शक्ति छी जे पिताक देल सम्पैत भाएकेँ दए अपने जोड़ भरि हाथ, जोड़ भरि पैरक संग एकटा मनक मालिक अछि। 'जेहेन मन तेहेन धन' समाजमे कहलो जाइते अछि।

पढ़ै-लिखैक नीक सुविधा नइ रहने दुनू भाँइ माने रामधनो आ गोबरधनो मैट्रिक पास केला पछाइत आगू नहि बढ़ि सकल।

बिआहसँ पहिलुका बँचल समयमे दुनू बहिन मिडिले तक जा सकल। भेद-भाव रहितो माने बेटा-बेटीक पढ़ाइ-लिखाइमे, गुरुचरण पूर्ण सन्तुष्ट छथिए।

चारिम बेटी 'यमुना'क बिआह करैत-करैत गुरुचरण साइठ बर्खक अवस्थामे पहुँच गेला। जहिना कियो परिवारक धारमे पैछला पीढ़ी, माने पैछला धारमे, माए-बापकेँ पकैड़ हुनके जीवनक प्रवाह मृत्यु-क्रिया पार करैत अपन जीवनक धारकेँ सन्तानक वाल्यावस्था पार करैत जीवनक कर्मयोनिमे पहुँचा परिवारक ऐगला भार धारक धारा सुमझा अपन जीवन मुक्त बुझै छैथ तहिना गुरुचरण अपना मुक्तावस्थामे पहुँच अपन संसारक जीवनक समीक्षा करैक विचार केलैन। पत्नीकेँ शोर पाड़ि गवाहक रूपमे लगमे बैसौलैन।

समतुरिया पत्नीकेँ अपन जीवन, यौवन आ जवानीक संगी बुझि गुरुचरण मुस्कुरा देलैन। पतिक मुसुकपन देखि गोविन्दीकेँ माने गुरुचरणक पत्नीकेँ, मनमे कोनो खोंच-खरोंच ऐ दुआरे नहि भेलैन जे एक तँ जीवनक संगीक मुस्की छी, दोसर जखन अपनो अर्द्धांगिनी छीहे तखन आधा तँ अपनो छीहे। भऽ सकैए जे अपन कोनो गलतीए देखि मुस्कुराएल होथि तँ आधा अपनो ऊपर तँ मुस्किएबे केलाह.! मनकेँ थीर करैत गोविन्दी बजली-

"किए शोर पाड़लौं?"

मुस्कुराइत गुरुचरण बजला-

"परसू, साठिम बर्खक सीमा पार कऽ जाएब। केतबो दुनियाँ धक्का मारलक तैयो कर्मक जिनगी पार कइये लेलौं। आब संयासक सीमामे प्रवेश करब। तखन कोन मतलब ऐ दुनियाँदारीसँ रहत। जेकरा रहतै से अपन लिअ।"

ओना, पतिक नव विचार सुनि गोविन्दी हर्खित भइये रहल

छेली मुदा केहनो जानकार किए ने होथि, नव डारि-पातबला नव पौधकेँ देखि तारतममे पड़िये जाइ छैथ जे नव पौध छी, केहेन एकर फल-फूल हएत। आगू बुझैक जिज्ञासासँ गोविन्दी पुछलकैन-

"से की?"

गुरुचरण बजला-

"जीवन दू रंगक अछि।"

पतिक मुहसँ नव विचार सुनि गोविन्दीक मनक पिपाशु सेहो बढ़ए लगलैन। तँए ओहन विचारकेँ मनेमे दाबि बिच्चेमे बजली-

"से की?"

पत्नीक जिज्ञासा देखि गुरुचरणक मनक प्रेम माने पत्नीक प्रति प्रेम, आरो लहलहाइत लतरए-चतरए लगलैन। बजला-

"बुझले अछि जे शासनोक अपन सेवावस्था साठिये बरख अछि। माने साइठ बर्खक उम्रक पछाइत सेवासँ निवृत्ति करैए, तहिना परसूसँ अपनो दुनू बेकती भऽ जाएब। दुनियाँक कोनो भार अपना ऊपर नहि रहत।"

पतिक विचार गोविन्दीक मनमे जेना घोंसिएलैन तेना कार्योन्मुख नइ भेलैन। तँए बजली-

"तँ केकरा ऊपर रहत?"

गुरुचरण बजला-

"ऐगला पीढ़ीपर रहत।"

ऐगला पीढ़ीमे दुनू बेटा अछि, आजुक परिवेश तेहेन बनि गेल अछि जे सभक सोझेमे अछि। आशा-निराशाक बीच गोविन्दी बजली-

"ऐगला पीढ़ीमे जे चारू–बेटा-पुतोहु–अछि, ओहो तँ दू रंगक

चालि-ढालिक अछि, तैबीच अँटावेश केना हएत।”

गुरुचरण बजला-

“जे बात अहाँ कहए चाहै छी, से अपनो बुझै छी जे एकटा श्रमप्रिय अछि आ दोसर श्रमहीन वा श्रमचोर अछिए। तइ बीचमे रहल अपन जीवन। अपन जीवनक मालिक तँ अपने ने भेलौं।”

‘अपन जीवनक मालिक अपने ने भेलौं’ कहि गुरुचरण पत्नीक विचार बुझै दुआरे चुप रहि गेला।

जहिना नव जगह वा नवजात बोन देखि रस्तामे कियो धकमका जाइए, तहिना गोविन्दी धकमकाइत बजली-

“से सम्भव अछि?”

गुरुचरण बजला-

“ऐगला पीढ़ी, माने चारू बेटा-पुतोहु जेहेन करत ओ अपना ले करत। नीक करत नीक बनत। नीक नइ करत तँ अपन जीवनकेँ ठकत। अपन जीवनक बेइमानी अपने करत।”



शब्द संख्या : 1560, तिथि : 24 मई 2022

उनटन

फागुन मास। फगुआसँ तीन दिन पूर्व रामेश्वर भाँगक निशाँमे उमकैत गाम-समाजसँ आँगन आबि पुबरिया घरक ओसारपर बैस मने-मन विचारलक जे परसूए फगुआ छी..! एकाएक फगुआक लहकी रामेश्वरक आगूमे हुलकए लगलै। रामेश्वरक मन मानि गेलइ जे फगुआ पाबैन सालक सभ पाबनिक राजा छी। राजा वएह ने जेकर आँट-पेट नमहर होइ। आन पाबनिक अपेक्षा फगुआक आँट-पेट नमहर अछिए। किए तँ जे पाबैन फागुक अन्तिम दिनक सीमापर होइए तेकर धुन माघक पंचमीएसँ होइए। माने भेल माघक बीसम दिन, जइ दिन पढ़निहार-लिखनिहार लोकैन सरस्वती पूजा मनबै छैथ आ किसानी जीवनसँ जुड़ल किसान खेतक जोत शुरू करै छैथ, माने हर ठाढ़ करै छैथ। तहिना पसारी लोकैन माने बरही सभ सेहो हरक फाड़, खुरपी, हँसुआ, कोदारिक मुँह-कान बनबैत पसारमे धान दए लाबा फोड़ि सालक किसानी जीवनक भाग्य-रेखा सेहो गुणबे करै छैथ जे ऐबेरक किसानी जीवन केहेन हएत, माने समय केहेन हएत।

एक दिनक पाबैन रहितो जहिना फगुआक धुन वसन्त पंचमीसँ शुरू होइए तहिना डम्फा-ढोलक आवाजक संग फगुआ-जोगिराक धुन सेहो फागुन बीतिते निकलए लगैए। तहिना शिवरातियेसँ, माने आधा फागुन चढ़िते लोक शिवरस[9] लेब सेहो

---

[9] **भाँगक रस**

शुरू कइये दैत अछि। शिवरस पीब रामेश्वर शिव राजेक धुनिमे पत्नीकेँ शोर पाड़लक।

अपन हाक सुनि सुवोधिनी बुझि गेली जे जरूर केतौ शिवपान करि कऽ पति एला अछि। अपन कर्मक क्रियाकेँ सुनबैत सुवोधिनी बजली- “हाथ लागल अछि, कनियेँ कालमे काज सम्हारने आबि रहल छी।”

रामेश्वरक मनक भावभूमि तेते ने उमंगित भऽ गेल छेलै जे होइ कहीं विचारे ने धारमे भँसि जाए। ओज भरल शब्दमे रामेश्वर बाजल-

“कर्मक क्रियाक कि ओर-छोर अछि जे ओकरा अन्त कइये कऽ अहाँ आएब। जे बँचि गेल तेकरा काल्हिले रहए दिऔ। एक गिलास पानि पीबाक तृष्णा जगि गेल अछि, पियाससँ कण्ठ सुखि रहल अछि।”

कण्ठ सुखब सुनि सुवोधिनी आगूक काजकेँ छोड़ि, आँगन आबि पतिकेँ भरल गिलास पानि हाथमे पकड़ा पानि भरल लोटा आगूमे राखि ठाढ़ भऽ गेली।

पानि पीबैसँ पहिने रामेश्वर पत्नीकेँ कहलैन-

“आइ बहुत बात कहैक अछि, तँए पहिने सुनियेँ लिअ, पछाइत जेतए जेबाक हुअए से जाएब।”

पतिक विचारमे सुवोधिनीकेँ दुबट्टी जकाँ दुनू विचार मनमे नचलैन। पहिल ई जे समाजमे बात कहब ओहनो अछिए जे अधला बात माने अधला विचार होइए। तैसंग दोसर विचार सुवोधिनीकेँ ईहो मनमे नचलैन जे पति भरिसक शिवभक्तिमे लागए चाहि रहला हेन, तँए परिवारक अपन सभ जिम्मा सुमझा दिअ चाहै छैथ।

विचारक द्वन्द्वमे पड़ल सुवोधिनी अपनाकेँ चुपचाप रहबेकेँ नीक बुझि बिना किछु बजने-भुकने आगूमे कलमच ठाढ़ रहली।

गिलासो भरि पानि पीब रामेश्वर बाजल-

“पियाससँ कण्ठ सुखि रहल छल, तैठाम अहाँ तेहेन अमृत पान करेलौं जे जीवन घुरि आएल। होइ छल जे पियासे प्राण निकैल जाएत।”

अपन काजक गुण सुनि सुवोधिनीक मन सेहो अमृतपान करैत फुटलैन-

“किछु खेबोक इच्छा होइए?”

दार्शनिक शैलीमे रामेश्वर बाजल-

“जखन मनक तृष्णे मेटा गेल तखन इच्छे कथीक रहत। इच्छा तँ मनक तृष्णासँ निकैल प्रवाहित होइए।”

अपना जनैत रामेश्वर जे बात बाजल तइसँ हटि सुवोधिनी बुझली। ओ बुझली जे जहिना अन्न पेटभरा होइए तहिना पानियोँ तँ अछिए। तृष्णा दुनूक अछि, अन्नो पानि मंगैए आ पानियोँ अन्न मंगिते अछि.! सुवोधिनी बजली-

“आब जाइ छी।”

रामेश्वर बाजल-

“जाइसँ पहिने किछु सुनि लिअ।”

“की?” पुछि सुबोधनी पतिक आँखिमे अपन आँखि देली तैबीच रामेश्वर बाजल-

“लंकोसँ बदतर अप्पन गाम बनि गेल अछि।”

पतिक बात सुनि सुवोधिनी मने-मन मोन पाड़ए लगली जे लंका अछि केहेन जे एना पति कहलैन। मुदा लगले सुवोधिनीक नजैर ओइ लंकापर सँ हटि गामक लंकामे, माने गामकेँ जे लंका नाम सुनली, आबि विचरण करए लगलैन। मुदा केतौ किछु नहि देखि

विचारली जे गाम तँ गाम जकाँ अछिए। कहाँ किछु केतौ देखि रहलौं हेन.! फेर दोसर दिस नजैर मुड़िते सुवोधिनीक मनमे जगलैन, रावणक लंका तँ सुनने छी मुदा ओकरा तँ त्रेते युगमे हनुमान आगि लगा जरा देलखिन आ राम रावणकेँ सत्यानास कऽ विभीषणकेँ राजा बना देलखिन। आजुक परिवेशो दोसर अछि, माने त्रेता युगक पछाइत द्वापरो बीत गेल आ अखन कलयुग चलि रहल अछि, तखन लंका रावण-राक्षसक रहल केना आकि रामेक स्थापित कएल रामराज्य की भेल? मुदा लगले सुवोधिनीक मन अपने भट-भुट करए लगलैन।

पत्नीक मनकेँ भट-भुट करैत देखि रामेश्वर बाजल-

"एना मन भट-भुट किए करैए.! हम गना दइ छी।"

पतिक मुहसँ 'हम गना दइ छी' सुनि सुवोधिनी मने-मन विचारली जे गिनतीए सुनब नीक हएत। नीक ऐ मानेमे हएत जे जेतेक गिनतीक संख्या रहत तेतेक रंगक भेल। सुवोधिनी बजली-

"की गना दइ छी, गनाउ।"

पत्नीक जिज्ञासा देखि रामेश्वरक अपने मन गवाही दिअ लगलै जे अर्द्धांगिनी भरिसक अर्द्धअंगक रूपमे अप्पन रूप सिरजए चाहि रहली अछि। शुरूहेक विचारकेँ पकैड़ रामेश्वर बाजल-

"आइ जे शिव दरबारमे श्रोता बनि बैसल छेलौं तखन की सभ सुनलौं से कहै छी।"

ओना, सुवोधिनीक मनक भावभूमिक विचार वौआइये रहल छेलैन मुदा पतिक मुहसँ सुनब जोर मारलकैन। बजली- "की सुनबए चाहै छी, सुनाउ।"

रामेश्वर बाजए लगल- "जहिना कोंढ़ि लोक काज देखि हट्ठाक कोंढ़िया बरद जकाँ हर देखिते-देरी कन्हा झाँकि पड़ि रहैए वा डोरी-

पगहा नेने लंक लऽ कऽ घर दिस पड़ाइए, तहिना श्रमचोर लोको ने काजक डरसँ लंक लऽ कऽ पड़ाइते अछि।"

पतिक शास्त्रीय धुनमे फगुआक भावक भाँज सुवोधिनी पेबे ने केलीह। अपन सोल्होअना मनक विचारकेँ कतवाहि करैत बजली-

"अपने मने अहाँ बजै छी आकि बकै छी से हम बुझबे ने करै छी। तँए कहि-कहि हमरा पुछि लिअ जे की बुझलिऐ। अहाँक विचार कोन रूपमे हम बुझलौं तेकर मुँह-मिलानी करैत ने आगू बढ़ब।"

पत्नीक विचारकेँ रामेश्वर वीणाक ओइ झंकृत आवाज जकाँ धियानसँ सुनलक जे मधुरसँ मधुरतम होइए। मधुर आवाजक अपन खास महत्व अछिए। मधुर आवाज तखने निकलैए जखन वीणाक ढील-ढील तार समरूपमे रहैए। तँए तारकेँ ओहन कड़ा नहि कऽ दिऐ जे टुटि जाए आ ने ओहन ढील रहए दिऐ जे आवाजे ने निकलए। रामेश्वर बाजल-

"हमहूँ अपन आँगुरक गीरहपर गनैत चलै छी आ अहूँ अपन आँगुरक गीरहपर गनि-गनि सुनैत चलू।"

सुवोधिनी बजली-

"जैठाम नइ बुझब तैठाम हम रूकिकऽ पुछि लेब?"

रामेश्वर बजला-

"पहिने पुबारि टोलक कहै छी, तेकर पछाइत पछबारि टोलक कहब। समय बँचत तँ उत्तरवारियो आ दच्छिनवारियो टोलक सुनाइये देब। मुदा एकटा बात पहिनहि कहि दिअ जे सभ टोलक लोक सभकेँ चिन्है छिऐ किने?"

सुवोधिनी बजली-

"सभकेँ मुँह-कानसँ भलेँ नहियोँ चिन्हैत होइऐन मुदा किछु

गोरेकेँ मुहोँसँ आ किछु गोरेकेँ नामोसँ तँ चिन्हते-जनिते छिऐन।”

रामेश्वर शिव दरबारक बातकेँ शुरू करैत बाजल-

“पुबारि टोलक पूबसँ कहै छी। रामखेलौन सन जमीन चोर ऐ इलाकामे के अछि? तहिना ओकरा घरक बगलेक जे रूपललबा अछि ओइसँ बेइमान के अछि? तहिना सिंहेश्वरसँ बेसी झूठ बजनिहार ऐ इलाकामे कएटा अछि? समाजमे एक-पर-एक राक्षस पसरल अछि की नहि?”

पतिक बातपर सुवोधिनीकेँ शंका भेलैन जइसँ मन डेरा गेलैन। सशंकित होइते बजली-

“बताह जकाँ अहाँ किए बकै छी।”

कोनो विषय वा विषयक व्याख्याक अपन धुनियो आ गतियो विषयकार वा व्याख्याकार चिह्नित करिते छैथ। जहिना सुवोधिनी गवेषिका जकाँ व्यस्त रहली तहिना रामेश्वर सेहो अपन विचार व्यक्त करैमे एते व्यस्त भऽ गेल जे पत्नीक नकारल विचार सुनबे ने केलक। अपना धुनिमे रामेश्वर आगू बाजल-

“कहू जे साले-साल देवना कातिक मासमे पनरह दिनक भागवत, व्यासजीक मुहेँ अपना दरबज्जापर सुनैए, तखन एहेन पतितपन चालि किए पकड़ने अछि। जे अपनेटा किए परिवारोकेँ घिनौनौं अछि आ घिनैबतो तँ अछिए, जइसँ गामो नइ घिनाइए सेहो केना नइ कहल जाए?”

अपना सुढ़िये रामेश्वर अपन बात बजैमे व्यस्त छल, मुदा सुवोधनीक मन डरे काँपि रहल छेलैन। तँए पतिक मुँहक ऐगला बात सुनैसँ मन उमैठ गेलैन। जइसँ विचार केली जे बाबूकेँ[10] किए ने जना

---

[10] **सुवोधिनीक ससुर आ रामेश्वरक पिताकेँ**

दिऐन जे अहाँक बेटा एना बकै छैथ। अपन ने पति छैथ तँए बलउमकियो अपना लग चलि सकै छैन मुदा पिता तँ से नहि भेला, ओ तँ कहुना पालन-पोषणकर्ताक संग जन्मदाता सेहो छथिन। मनमे अबिते सुवोधनी ससुरकेँ माने सुन्दरलालकेँ कहैक विचार मनमे रोपि जहाँ उठए लगली कि रामेश्वर बाजल-

“बस भऽ गेल.!”

पतिक विचारक धारक धाराकेँ मोड़ैत सुवोधिनी उठैत बजली-

“जखन धियानसँ सुनैले अहाँ कहलौं अछि तखन देहो-हाथ आ मनोकेँ हल्लुक बनाकऽ राखए पड़त किने, जइसँ सुनबोमे नीक लागत।”

पत्नीक विचारपर रामेश्वर बेसी तर्क-वितर्क नहि कए आरामसँ बाजल-

“रस्तामे देरी नइ लगाएब। जल्दी आएब।”

‘जल्दी आएब’ सुनिते सुवोधिनीक मनमे जेना दोसर चोट पड़ि गेल होनि तहिना भेलैन। माने ई जे अपन मनक विचार सुनबैले ससुरक खोजमे जा रहल छेली, मुदा ‘रस्तामे देरी नइ लगाएब। जल्दी आएब’ सुनि कए तरहक बात मनमे उठए लगलैन। मने-मन सुवोधिनी विचारली जे किछु बाजब तखन ने दोखी हएब, जँ किछु बजबे ने करब तखन जे देरीसँ एलापर पुछता तँ अगर-मगर करैत मुँह बन्न कऽ लेब।

ओना, सुन्दरलाल दरबज्जेपर सँ बेटा–रामेश्वर–क वक्तव्य सुनि रहल छला मुदा अपने मन ठेलैत कहलकैन जखन पत्नीक सोझामे बेटा बाजि रहल अछि, तैबीच अपन जाएब उचित नहि। मुदा विचार तँ अपनो सुनब अछिए। सुन्दरलाल तँए सभ किछु सुनि रहल छला। तैबीच पुतोहुकेँ उठब देखि माने ओइठामसँ हटब देखि

अपनो आगू बढ़ि अँगनाक कोनचरक अढ़मे आबिकऽ ठाढ़ भऽ गेला। तैबीच रामेश्वर ऐगला गिनतीमे बाजल-

“सोनमा सन धड़कट-गरदैनकट गाममे कएटा अछि।”

बेटाक बात सुनि सुन्दरलालक मन गदगदो भऽ रहल छेलैन आ हदमदी सेहो छेलैन्हे। अभिमन्यु सन जँ बेटा जन्म लिअए तखन ने, आ जँ बर्बरी सन पित्ती जकाँ भरि दिन शब्दवाणे चलबैत रहत आ बेवहारवाण बुझबे ने करए, तखन.?

इमहर शान्त, सौम्य, सुन्दर सुवोधिनीक चित्त देखि रामेश्वर सुवोधिनीकेँ पुछलक-

“परसू फगुआ पाबैन छी आ तैसंग मासेक अन्त नहि सालक अन्त सेहो छी, से बुझै छी किने?”

पतिक बेवहारिक बात सुनि सुवोधिनी बोधैत बजली-

“जहिना मासोक अन्त आ सालोक अन्तक सीमापर तिलासकराँइत होइए, जइमे सुर-सुर-सँ-मुड़-मुड़ धरिक परसाद चढ़ैए, तहिना ने फगुओ छी।”

जहिना इमानदार लोक एक नजैरसँ अप्पन मातो-पिता आ बेटो-बेटीकेँ देखै छैथ तहिना ने फागुनोक फगुआक धुन जोगीरा गाबि ऋतु सेहो अपन[11] अन्त करबे करैए, तँए ओहने सुर-सुर, मुड़-मुड़ हेबा चाही।”

तैबीच सुन्दरलालक मनमे उठलैन, बेटा बनैक रूपमे जँ रामेसरा ठाढ़ हुअ चाहैए तँ हम किए मनाही करबै। मुदा हाथीक सुढ़ानु मुँहक बोल रोकब असान थोड़े अछि, ओकर नाँङैरियो उठत कि नहि उठत से अपन शक्ति अपने बुझत किने।

[11] **मासक**

आँगनक ओसारपर बैसल रामेश्वर पत्नीकेँ उनटनक हाक ताधैर दैत रहल जाधैर सुवोधिनी भानस करए उठिकऽ चलि नहि गेली। मुदा सुन्दरलाल तइसँ पहिनहि कोनचर लगसँ बढ़ि दरबज्जाक चौकी लग आबि बैसैक ओरियान करए लगला।



शब्द संख्या : 1581, तिथि : 26 मई 2022

अर्द्धांगिनी

दुरागमनक पछाइत अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजीक पहिल भेँट रहैन। नव पीढ़ीक मनमे शंका हेबे करतैन जे वर्तमान परिवेश ओहन अछि जे ‘दुरागमन’ शब्दकेँ, जे पहिने डिक्शनरीए टामे नहि समाजोमे बेवहारक रूपमे चलैत आबि रहल छल, आब म्यूजियम-घरमे सजा देबा चाही। किएक तँ आब दुरागमनक सीमे मेटा गेल, माने ई जे दुरागमनसँ पहिने बिआह होइ छल, जइमे दुनू पद्धतिक चलैन बेवहार रूपमे छल। छल ई जे बहुसंख्य जातिमे दुरागमनसँ पूर्व बर-कनियाँक बीच गप-सप्प नहि होइ छल। अनुकूल परिस्थितियो छेलइ। माने ई जे बाल-बिआहक चलैन रहने बर-कनियाँ मात्र अपन बाप-माइक बेटा-बेटी बुझै छल। मुदा किछु जातिक बीच बर-कनियाँमे गपो-सप्प आ जीवन लीलाक क्रीड़ा सेहो चलै छल। दुनूमे अन्तरक कारण छल बाल-बिआह आ चेष्टगरक बीच बिआह। आजुक परिवेशक रूप एहेन पकैड़िये लेलक अछि जे बिआह-दुरागमनक कोन बात जे तइसँ पूर्वेसँ वैचारिक सम्बन्धक संग जीवन-क्रीड़ाक रूप सेहो बनिर्यें गेल अछि। खाएर जे अछि से समाज आ समाजक लोक बुझौथ, तइसँ अवधेलाल भैया आकि देवसुनरिये भौजीकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन आ अप्पन पारिवारिक जीवन क्रीड़ासँ जे दुरागमनक पछाइत शुरू भेलैन।

पनरह-सोलह सालसँ ऊपरक दुनू बेकती, माने अवधोलाल भैया आ देवसुनरियो भौजी, भइये गेल छैथ। दुनूक अपन मन-

संसारमे अपन-अपन परिवारो आ समाजोक मान-मर्यादाक प्रश्न छैन्हे। जीवन शुरू होइसँ पहिने हरदा तँ कामचोर, देहचोर आ मनचोर ने बाजिकऽ मानि लेत मुदा देहगर, कमगर, मनगर लोक तँ से नहि मानत। तहूमे गीता-भागवत इत्यादिक व्याख्यान समाजमे सदिकाल चलिते रहैत अछि।

अवधलाल भैया अपन पुरुषार्थ पत्नीकेँ सुनबैत बजला-

“बुझल अछि कि नहि जे ई धरती ओहन-ओहन पौरुषवान पुरुखक छी जे पत्नीक खातिर माने द्रौपदीक खातिर पाँचो भाँइ पाण्डव महाभारत सन युद्ध केलैन। तहिना तहूसँ पहिने त्रेते युगमे सीताक खातिर राम रावणक लंकाकेँ जरेबेटा नहि केलैन सत्यानासो कऽ देलैन।”

अपना जनैत जइ हिसाबसँ अवधलाल भैया बाजल छला तइ हिसाबसँ देवसुनरि भौजी नहि बुझली। ओ अपन दादीक मुहसँ शिष्टाचारक रूपमे सुनने छेली जे सावित्री केना सत्यवानक संग अपन जीवन बनौलैन, तहिना बुझली। अपन विचार रखैत देवसुनरि बजली-

“हम ओइ वंश आ समाजक बेटी छी जे ने कहियो केकरो आगू हाथ पसाइर भीख मंगलक आ ने माँगत। अपन बाहुबलसँ पतिव्रता बनि पतिव्रत जीवनक पालन करैत आएल अछि आ आगूओ करैत रहत।”

अपना-अपनी दुनू परानी अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजी एक-दोसराक आगूमे जीवनक अपन-अपन विचार रखलैन। ओना, दुनू अनभुआर छथिए, माने जीवनक अनभुआर, किए तँ समाजक जइ समुदायक दुनू बेकती छैथ ओ समुदाय अखन ओइ सीमापर नहि पहुँचल अछि जइ सीमापर सँ मनुज मन आगू बढ़ैए। अखन ओ

पेने पकड़ने अछि, माने जीवनक जे माप-तौलक पैमाना राखल अछि तइमे जीवन अखन पेने पकड़ने छै। ऐठाम हरवाही पेना नहि, पानिक वर्तनक पेन बुझब। मुदा किछु अछि, एते तँ अछिए जे बिआहक उमकी हर पुरुख-नारीमे जागिये जाइए। तहूमे जैठाम माए-बापक सिरे जीबैबला बाल-बच्चा, जे जीवनक बिना चोट खेने अपन शब्दवाणक पाग निच्चाँ किए करत।

ओना, जीवनक जइ मोड़पर पति-पत्नीक भेँट होइए आ जीवनमे ताजगीपन अबैए, जँ ओकरा ओहीठाम जीवनक चुट्टासँ पकैड़ जीवनक बन्धनमे बान्हि कर्म-धर्मक संकल्प बोध करौल जाए तँ जीवनमे गाढ़पन एबे करत। रावणक दरबारमे हनुमानकेँ दुनू हाथ बान्हि उपस्थित कएल गेलैन आ जहिना हनुमान अप्पन नाङैरिक आसन बना, रावणक आसनसँ ऊँचगर आसनपर बैस जवाब दइले तैयार भेला, तेना दुनू परानी अवधलाल भैयाकेँ नहि भेलैन। केतबो बलवीर वा बलशाली हनुमान किए ने छला, मुदा छला तँ परिवार विहीन। ने आगू कोनो नाथ छेलैन आ ने पाछू कोनो पगहे।

मनुक्खक जीवनक सीमा जहिना ऊपर सात लोक अछि माने धरती-सँ-अकास धरिक बीच, तहिना निच्चोँ ने सात लोक अछिए जे तल-अतलसँ निच्चाँ होइत पताल तक पहुँचैए। पारिवारिके मनुक्खक जीवन ने समूहपन[12]क पहिल सीढ़ी छी। जेतए एक-सँ-अनेक रंगक मनुक्खक, माने बच्चासँ वृद्ध धरिक समावेश एक पद्धतिमे होइए। जैठाम पाँच-पाँच, सात-सात पुस्त धरिक मनुक्खक समावेश होइए, ओहन संयुक्त परिवार मिथिलांचलक एक्के समुदायक बीच नहि, बहुजन समाजक बीच छेलैहो आ पतराएल रूपमे अछियो। जेकर हजारो ज्वलन्त इतिहास समाजक बीच

[12] **संगठन**

अखनो विद्यमान अछिए। अखनो ओहन परिवार जीवित अछि जे छेहा सर्वहारा छी। जेकरा देह छोड़ि किछु ने छै, मुदा ओकरो परिवारमे परबाबासँ लऽ कऽ पर-पोता धरिक बास सिनेहसँ जीवन-धारण केनहि अछि। खाएर जे अछि, ऐठाम अवधलाल भैया आ देवसुनरि भौजीक अपन जीवनक लीला छिऐन।

पहिल दिनक मिलन दुनू परानी अवधलाल भैयाक छेलैन तँए किए कियो अपनाकेँ लंकाक राक्षस जकाँ जे एकावन हाथ भलेँ नहि हुअ मुदा उनचास हाथक नहि मानितैथ। संगी पेब दुनूक मनमे खुशीक लहरिक जुआइर उठले रहैन तँए अवधलाल भैयाक मनसँ परिवारक रूप उड़िया गेलैन। मनमे रहबे ने केलैन जे पिताक देल मात्र बीघा भरि खेत अछि। ओहीमे कट्ठा भरिक बास आ बाँकी दू कट्ठामे गाछी-कलम अछि, जइमे सरही-कलमी मिला पाँचटा आमक गाछ अछि आ हत्तापर तीनटा शीशो, दूटा गमहाइर आ सातटा खएरक गाछ सेहो अछि। अवधलाल भैयाक मनमे किए उठितैन जे एकटा बरद आ एकटा दुधारू महींसो अछि। आजुक परिवेश ओहन मोड़पर आबिये गेल अछि जैठाम जहिना संयुक्त परिवारक जे सघनता छल ओ अखन एकाकीपनमे बदैल गेल अछि, तहिना कृषि कार्यक जे सघनता छल तहूमे एकाकीपन आबिये गेल अछि। पशुपालन हुअ कि खेती, माछ पोसव हुअ कि छोट-मोट उद्योग, जे जीवनक एक हिस्सा छल ओ आइ अपन पूर्णता प्राप्त कऽ लेलक अछि। जइसँ जीवन जीबाक एहेन सघन वन बनियेँ गेल अछि जे वनक कोनो कोणमे यापन कइये सकै छी।

जहिना अवधलाल भैया अपन परिवारक पागकेँ ऊपर उठौने अपन तावमे बाजल छला तहिना देवसुनरि भौजी सेहो अपन परिवारक हस्तीकेँ बिसरने जा रहल छेली जे पिताकेँ मात्र दू बीघा खेत छेलैन, तहीमे दुनू परानी दिन-राति कर्मक ओछाइनपर

ओंघराइत परिवारकेँ ठाढ़ केने तीनटा बेटियो बिआह केलैन आ बेटाकेँ सेहो स्कूल धरौने छैथ।

दुनू परानीक बीच, माने अवधोलाल भैया आ देवसुनरियो भौजीक बीच, झूठक पुलिन्दासँ जीवन शुरू भेल। मुदा ओ झूठ जीवनक रन्दाक बीच जखन आगू बढ़त तखन ने सखुआक तख्ता जकाँ चिक्कन बनैत चलत।

अवधलाल भैया अपन हीनता नहि दीनता देखबैत बजला-

“आइ पहिल मिलन छी तँए दुनू गोरेकेँ मिलिकऽ अपन जीवनसूत्रक सूत्रपात कइये लेब नीक हएत।”

ओना, देवसुनरि भौजी नहि बुझि पेली जे पति महराज अपन की प्रस्ताव देलैन, मुदा यौवनक उद्वेगमे उद्वेलित छेलीहे, जे असाधसँ असाध काजकेँ करैक उमंग मनमे जागिये गेल छेलैन। बजली-

“जहिना अपन माए-बापसँ हाथ छोड़ा अहाँक हाथ पकैड़ ऐठाम एलौं हेन, तहिना अपने दुनू गोरे ने संगी बनि संग-संग चलबो करबै आ प्रेमसँ संगे रहबो करबै।”

पत्नीक मधुर बोल सुनि अवधलाल भैया गदगद भऽ गेला। अपन गदगदीक भविस देखि बजला-

“बुझले बात अछि किने जे जइ जमीनपर जन्म नेने छी ओ एक दिन अही जमीनमे विलीन भऽ जाएत।”

बिच्चेमे टोकरा दैत देवसुनरि भौजी बजली-

“एकरा के काटत।”

अपन जीवनक अन्तिम छोर पकैड़ अवधलाल भैया बजला-

“अखन अपन दुनू परानीक परिवार छी, तइमे जँ हम अस्सक भऽ जाइ वा मरिये जाइ तँ अहाँक जीवन केना चलत?”

हलैसकऽ देवसुनरि भौजी बजली- "सती सावित्री जकाँ।"

बजैक क्रममे जहिना देवसुनरि भौजी बजली जरूर मुदा की बुझि बजली से तँ हुनकर अभ्यंतरे जनैत हेतैन, तहिना बुझैक क्रममे अवधलाल भैया की बुझलैन सेहो वएह ने बुझने हेता। तेसर की तेसरक बात बुझत। अपनसँ दोसरक बात बुझैमे तँ लोक फेड़मे पड़ि जाइए, तेसर तँ सहजे तेसर भेला। तेसर भलेँ अर्द्धांगिनीकेँ पुरुष-नारीक बीचक जीवनकेँ क्रीड़ा बुझह मुदा क्रीड़े ने क्रिया-कर्म सेहो सिखबैए। पुरुख वा पौरुख नारीक अपन अंश बुझह वा नारीमे पुरुखक आधा अंश बुझह। मुदा मनुक्खक जीवन तँ तहूसँ आगूक अछि। सती सावित्रीक रूप सत्य-सवृत्ति बुझैत आकि सत्यवानक सद्-वाण बुझैथ, तइसँ अवधलाले भैया आकि देवसुनरिये भौजीकेँ कोन मतलब छैन। कोन मतलब छैन जे राधाक शक्ति पेब कृष्ण शक्तिवान भेला आकि कृष्णक शक्ति पेब राधा शक्तिशालीनी भेली। अवधलाल भैयाकेँ मतलब एतबे छैन जे अपने दुनू परानी केना एक कालखण्डक संग अपन परिवारकेँ समयानुकूल गतिशील बना ऐगला पीढ़ीकेँ ओहन परिवार बना दिऐ जे ओ असानीसँ अपन जीवनक कालखण्डकेँ पूजि सकत।

पत्नीक विचार सुनि अवधलाल भैयाक मनमे जेते बिसवास जगक चाही से नहि जगलैन मुदा आठोअना नहि जगलैन सेहो बात नहियेँ अछि। अखन तकक जे समाजक बीचमे पति-पत्नीक रूप देखैत आबि रहल छैथ जे थापर-मुक्का खेलाक पछातियो महिला पुरुखक संग नहि छोड़ै छैथ तइ अनुकूल बिसवास जगबे केलैन। मुदा ई किए अवधलाल भैया सन लोकक मनमे जगितैन जे अखण्ड दुनियाँमे अपन हिस्साक खण्ड बना दुनियाँक बीच रहितो अपन दुनियाँ गढ़िकऽ ठाठसँ हँसैत-खेलैत जीवन-मृत्युक बीच रमि लेब। मुदा एहेन विचार अवधलाल भैयाक मनमे जगबे ने केलैन जे एक

दिस रोगकेँ[13] मेटबैले अरबो-खरबोक अस्पताल बनलो अछि आ बनियोँ रहल अछि तैठाम बरक गाछक एकटा छोट-छीन डारिकेँ पूजि सावित्री सत्यवानक सेवा नहि करए चाहै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। जखन समटल जीवनमे एकाएक, माने अखन धरिक सामाजिक वा पारिवारिक वा बेकतीगत जीवन छल तइमे अकस्मात, अनेको जीवन पद्धति उठिकऽ ठाढ़ भेल अछि तैठाम तँ अपने ने देखए पड़त जे अपन सीमा की अछि, जैठामसँ अपन ऐगला डेग उठाएब।

अवधलाल भैया बजला-

"जखन परिवारकेँ दुनू परानी मिलि निरमबैक सप्पत खा आगू मुहेँ चलैक विचार केलौं, तखन जँ कोनो कारणेँ हम मरि जाइ तँ अहाँ की करबै?"

अपन नारी चरित्र देखबैत देवसुनरि भौजी बजली-

"जखन हम अर्द्धांगिनी रूप बनि ठाढ़ भेलौं तखन अहाँक सभ वृत्तिकेँ, माने जीवनक सभ क्रियाकेँ अपनामे अङेजने रहब आ ताबत धरि परिवारो ठाढ़े रहत जाबतकाल धरि ठाढ़ होइक शक्ति रहत।"

पत्नीक विचार सुनि अवधलाल भैयाक मुँहक हँसी छिटकलैन। पतिक हँसीकेँ देवसुनरि भौजी दुनू रूपमे लेली। खुशीक रूपमे सेहो आ हासियापर जेहेन होइए सेहो। देवसुनरि भौजी दोहरबैत बजली-

"हम ओहन नारी नहि छी जे पुरुखक भरोसे जीबए चाहैए। तखन तँ भेल जे नारी-जीवनक सार्थकता लेल किछु क्षण एहेन

[13] **बीमारीकेँ**

अछिए जइमे संगीक जरूरत अवश्य पड़ैए।”

पत्नीक विचार अवधलाल भैया नीक जकाँ नहि बुझि सकला। तँए अपन चिन्ता व्यक्त करैत बजला-

“समाजक बीच जे नारीक दुरगति देखै छी तइसँ मनक बिसवास झुरझुराइए।”



शब्द संख्या : 1511, तिथि : 30 मई 2022

बहवाँइर

आइये नहि, सभ दिनसँ जहिना मनुक्ख-मनुक्खमे दूरी बनल आबि रहल अछि तहिना परिवारो-समाजो आ देशो-दुनियाँमे सेहो दूरीपन आबिये रहल अछि। दूरी बनैक कारण सेहो दोहरी रंगक अछिए। जेकरा दैवीय वा प्राकृतिक सेहो कहि सकै छिऐ आ दोसर मानवीय सेहो अछिए।

अखन धरिक जे मनुक्खसँ लऽ कऽ परिवार-समाज आ देश-दुनियाँक इतिहास, माने बीतल समयक रूप, रहल अछि ओ जहिना मनुक्ख-मनुक्खक बीच दूरी–भिन्नता–नेने आबि रहल अछि तहिना परिवारो-समाजक बीच सेहो बनल आबि रहल अछि।

लाखो बर्ख पूर्व मनुक्ख धरतीपर आएल, माने जन्म लेलक। कहब जे आजुक समयमे जहिना देश-देश, समाज-समाज आ परिवार-परिवारमे मनुक्खक बच्चाक जन्म होइए, तहिना सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। मुदा मनुक्खक जीवनमे दूरी रहने बच्चाक उदयसँ, माने माइक पेटसँ जहिया उदय होइए तहियोसँ आ जाधैर बच्चा रूपमे धरतीपर अबैए तइसँ पूर्वोसँ, परिवार-परिवारक बीच दूरी रहने बच्चाक जन्मोमे अन्तर आबिये जाइए।

ओना, मनुक्खक जे रूप सोझहामे अछि, ओ एकाएक नहि भेल अछि, मनुक्खक एहेन रूप बनैमे सेहो लाखो बरख समय लगले अछि। धरतीपर जीव-जन्तुक उदयसँ पहिने चर-अचर, माने गाछ-बिरीछक उदय भेल। मुदा गाछो-बिरीछक उदय तखन भेल जखन

धरती बनि चुकल छल। तहूसँ पहिने माने धरती बनैसँ पहिने पानि केना बनल? हवा केना बनल? इत्यादि-इत्यादि अनेको प्रश्नो अछि आ उत्तरो तँ तेकर अछिए।

दरबज्जापर बैसल बिमलदेव काका अपन परिवारो आ परिवारजनोपर नजैर खिरबैत मने-मन खिन्नो भऽ रहल छला आ खनखनेबो तँ करिते छला। सात गोरेक परिवारमे बिमलदेव काका अपनाकेँ असगर-क-असगरे देखि रहल छला। ओना, असगर देखि बिमलदेव कक्काक मन जहिना टुटान देखि रहल छेलैन तहिना जुटान सेहो देखि रहल छेलैन। तँए मन एमहर-सँ-ओमहर आ ओमहर-सँ-एमहर कइये रहल छेलैन। अपन जिनगीक चौदहअना (माने 90 प्रतिशत) उपार्जनक काज जहिना बिमलदेव काका अपना हाथ-मुट्ठीमे रखने छैथ तहिना तेकर उपयोगक बेवस्था सेहो अपना अधीनेमे रखने छैथ। एक परिवार रहितो बिलमदेव काका परिवारमे देखिये रहल छला जे जहिना परिवारक लोक बहवाँइर भऽ गेल अछि तहिना परिवारक बेवस्था सेहो बहवाँइर भइये गेल अछि। परिवारेटा किए कहबै देश-दुनियाँक संग समाजो भइये रहल अछि।

संयोग बनल, आमक गाछीसँ अबैत रही, दहिना हाथमे पाकल आमक जाली छल, बिमलदेव कक्काक दरबज्जासँ थोड़ेक पाछूए रही कि बिमलदेव काका धक्-दे मोन पड़ला। पाँचे दिन बरिसाइत–बट सावित्री–केँ बितना भेल अछि, तँए आम पाकब तँ शुरू भऽ गेल अछि मुदा भरखरि नहि पकने गामेमे बहुतो गोरेकेँ अखन तक आम नसीव नहि भेलैन अछि। मनमे बिमलदेव काका अबिते मने मनकेँ कहलक, गाममे श्रेष्ठजन जँ कियो छैथ तँ बिमलदेव काका छैथ। अखन तक मिथिलाक परम्परा रहल अछि जे शुरूक कोनो फले वा कोनो आने भोज्ये-पदार्थ, जँ धरतीपर अबैए तँ पहिने ओ वुद्धजनेक मुँहमे देल जाइए। जखन ऐठाम तक आबि गेल

छी, तखन किए ने बिमलदेव काकाकेँ खोजि अपन हाथक रोपल आमक गाछक आमक दर्शन करा दिऐन।

दरबज्जाक सोझ अबिते देखलौं जे बिमलदेव काका असगरे दरबज्जापर बैसल किछु धियान कऽ रहला अछि। अपने मन मनाही केलक जे जखन विमलदेव काका कोनो धियान कऽ रहला अछि, तइमे किछु बाजि धियान तोड़ब राक्षसपन हएत। ओना, जखन मनमे आबि गेल अछि जे आमक अगता फल छी, बिमलदेव काकाकेँ भरि मन खुएबैन, सेहो तँ पुराएब अछि। ऐठाम भरि मनक माने ई नहि बुझब जे गाछक जेतेक पाकल आम अछि, सभटा हुनके दऽ देबैन। आमक जाली आगूमे राखि देबैन। अपने तेहेन पारखी सुतिहार लोक काका छैथ जे मने-मन आमकेँ गनि अप्पन हिस्सानुरूप लऽ लेता। बाँकी अप्पन परिवार बुझि छोड़ि देता।

ससरैत-ससरैत दरबज्जाक ओलती लग पहुँच गेलौं, मुदा ताधैर बिमलदेव कक्काक धियानमे कमी नहि एलैन। धियानोक अपन प्रक्रिया अछिए, एक खण्डित दोसर पूर्णपन होइए। अखन से नहि, अखन बस एतबे जे माला-जपक धियान नहि जीवनक विचार, बेवहार आ भावक धियान अछि। धियान-साधनाक जे प्रक्रिया सोझामे देखै छी तइसँ भिन्न रूप जीवनक धियान-साधनाक सेहो अछिए। विमलदेव कक्काक आँखिक पल बन्ने रहैन मुदा मुँह मुस्किएलैन। ओना, आँखि बन्न रहला पछातियो चेहराक ओहन खुशपन रूप रहितो अछिए जे अपन हाव-भावसँ जागलो आ सुतलोक प्रदर्शन सेहो करिते अछि। से जरूरी नहि अछि, नहियोँ करैए। देखिते छी जे चौकीदारीक दरमाहा पौनिहारो दरमान-सिपाही काजोक समयमे, माने ड्यूटीपर रहितो, आरामसँ बैस ताश-शतरंज सेहो खेलते अछि।

बिमलदेव कक्काक मुस्की देखि अपनो मन ओहिना प्रसन्न भेल जहिना भगवानक प्रसाद देखि होइए। अपने मन कहलक जे बिमलदेव काकाकेँ प्रणाम करैसँ पहिने अपने प्राणायाम किए ने कऽ ली। किए ने अपने खखैस अपन कण्ठक क्रीड़ा भूमिकेँ पवित्र बना ली, सएह केलौं, दम्माक रोगी जकाँ तँ जोरसँ नहि खखसलौं मुदा मुँह दाबि नहि खखसलौं सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अपन खखसब सुनि आकि अपन मनक विचारक पाराग्राफ पूरि गेने, बिमलदेव काका आँखिक पल उठा जहिना अन्हारमे टार्चक इजोत देनिहार निच्चाँ-सँ-ऊपर आ ऊपर-सँ-निच्चाँ देखि सौंसे शरीरक छानबीन करै छैथ तहिना बिमलदेव काका सेहो केलैन। तैबीच अपनो पछुआएल काज मोन पड़ल। हाँइ-हाँइकऽ पहिने वएह विध पुरबैत बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी।”

आमक जाली देखि आकि पाबनिक उनाड़ी भेल पाबनिक पाछुक दिन देख, बिमलदेव काका कहलैन-

“चरितर, बरिसाइत पाबैनकेँ आइ पाँचम दिन छी, आम पकै छह कि नहि? आजुक परिवेशमे लोक डायरीमे खेती-बाड़ीक हिसाब माने कहिया कोन फसिल लगौल जाएत आ कहिया काटल जाएत, लिखि अपन काज करै छैथ, मुदा बिनु पढ़ल-लिखल लोको आ समाजो ऐ काजकेँ केना करता। ओ तँ यएह ने करता जे जे काज सामूहिक अछि ओकरा पेबैले सामूहिक पाबनिक रूप बना रखता तखने ने जीवन चलि सकैए। एकर माने ई नहि बुझब जे कातिक मासक छठि पाबनिक अँकुरी-प्रसाद जकाँ जे अँकुरल केराउ-मटरकेँ हाल दऽ बनौल जाइए, सएह बुझि मानि लेब जे आब बाउग करैक माने खेतमे लगबैक समय सिरचढ़ भऽ गेल।”

भाय दुनियाँमे केतौ किछु होउ, मुदा ओ तँ भेल सामूहिक, तैबीच अपनो बेकतीगत छाड़-भार सेहो तँ अछिए। बरिसाइत पाबैन भेल, बड़बड़िया, गुलाबखासबलाक ने जे पहिने पकतैन, मुदा कलकतिया-राइरबलाकेँ अगता किए पकतैन। अप्पन आम पकब शुरू भेल, बुझलौं जे आमक मास आबि गेल। अपना कोन मतलब अछि जे स्त्रीगण जकाँ बरिसाइत पाबैन करी। सुनै छी जे बट सावित्री पाबैन सावित्री-सत्यवानक बीचक वृतान्त छी..! ऐठाम ईहो नइ कहै छी जे पुरुख-नारीक बीच भेद बढ़बैमे पाबनियो-तिहार हँसेरीक काज करिते अछि। माने ई जे किछु पाबैन पुरुख-महिलाक बीचक अछि, मुदा खास-खास पाबैन एहनो तँ अछिए जे खास महिलेटाक छी। हलैस कऽ बजलौं-

“काका.! पाबैनसँ अपना कोन सरोकार अछि सरोकार अछि, आमक मास छी आम खाइसँ। आइ पहिल दिन एक जाली पाकल आम भेटल अछि, अपने श्रेष्ठ छिऐ तँए प्रसाद रूपमे अपनेकेँ चढ़बए आएल छी।”

कहि आमक जाली कक्काक आगूमे रखि देलिऐन। जाली उनटैबते आम धरतीपर ओंघरा गेल। पहिने एक-एककेँ बिलमदेव काका गनलैन, गनला पछाइत आम सभक मुँह मिलानी करैत बजला-

“चरितर, बुझि पड़ैए जे पाँच गाछक फल छी, किए तँ मुहौं-कान आ देहक रूपो पाँच रंगक अछि।”

जइ हिसाबसँ बिमलदेव काका बिटियाकऽ पुछलैन तइ हिसाबसँ अपने बिटियाकऽ नहि देखने छेलौं। गाछीए छी, गाछक सघनता अछिए, कोन गाछक फल कोन गाछक निच्चाँमे अछि, से भँजियबैक खगते कोन छल। आकार-परकार अन्तर भलेँ होउ, मुदा

सभ तँ अपने छी। बजलौं- “काका, खुदरा-खानि गाछबला लोक ने रंग-रूप देखैए, मुदा गाछी-कलमबला जँ से देखए लगत तखन तँ अनेरे ने समयक बरवादी हएत।”

अपन विचार बिलमदेव काकाकेँ जँचलैन, तँए मुँह बन्ने रखला। आमकेँ भाँजपर चढ़ा पाँच कुरी लगौलैन। माने पाँचो रंगक आमकेँ पाँचठाम करैत बजला-

“चरितर, केते गोरेक परिवार छह?”

“छअ गोरेक।”

पनरहटा आम रहने बिलमदेव काकाकेँ हिसाब भाँजेपर ने चढ़लैन। भाँजोपर केना चढ़ितैन। अपने मिला कऽ सात गोरे भऽ जाइथ। बजला-

“बारहटा आम परिवार ले रखि लाए, बाँकी रहए दहक।”

पेट भरल खेनिहारकेँ जहिना खुएनिहार[14] आग्रहपर आग्रह करै छैथ तहिना आग्रह करैत बजलौं-

“कका, सभटा अहींले अनलौं हेन।”

तुष्ट मनसँ बिमलदेव काका बजला-

“चरितर.! तोरो आग्रह दिव्ये छह, मुदा अपनो विचार तँ किछु कहिते अछि। देखिते छहक जे सभक मुहसँ निकैलते अछि जे हे भगवान! विमल चरित्रक निर्माण कऽ दाए, मुदा रस्ता पकैड़ लोक चलै केतेक अछि जे भऽ सकत।”

अपन दुनू हाथ आम सरिआबैमे लागल छल, आँखि देखैमे व्यस्त रहए, तैबीच कानकेँ बोल जगा देलक आ मन ओहन गहींरगर अछिए नहि तँए विवेकहीने रहल। जइसँ विमलदेव कक्काक विचार

---

[14] **बारीक**

नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पाशा बदलैत बजलौं-

“काका, आब कि गाछी-कलम बाप-दादाक ओ गाछी-कलम जकाँ रहल जे एकबट्ट रहैत, आब बहबाँइर भऽ गेल।”

हमर बात सुनि बिमलदेव काका ओहिना चौंक गेला जहिना वर्षाकाल मेघक गर्जनसँ लोक चौंकैए। बिमलदेव काका चौंकला जरूर मुदा मुँहक फाटककेँ बन्ने रखलैन। तैबीच अपने बारहो आम सेरिया जालीक मुँह बान्हि आगूमे रखलौं। खाली समय देख, माने चुपा-चुपी देखि बिमलदेव काका बजला-

“की बहवाँइर भऽ गेल चरितर?”

बजलौं-

“काका.! पहिने माने पूर्वजक समयमे, गाछी-कलममे एकरूपता छल। माने एक किस्मक आमक गाछ लोक लगबै छला, जइसँ एक समयमे आमक मास एक होइ छल आ सभ मिलि सभ खाइ छेला।”

हमर विचार बिमलदेव काकाकेँ नीक लगलैन, बजला-

“हँ, से तँ छल।”

बिमलदेव कक्काक विचारक सह पेब बजलौं-

“आबक गाछी-कलम बहबाँइर भऽ गेल अछि। ने गाछी-कलम एकठाम रहल आ ने एक-रंगक आमे रहल।”

मुड़ी डोला-डोला बिमलदेव काका सुनि रहल छला, मुदा बजै किछु ने छला। अपन साँस रूकिते बिच्चेमे बजला- “हँ, से तँ नहियेँ रहल।”

ओना, मनमे ईहो रहैन जे अपना ऐठाम माने मिथिलाक समाजक निर्माण केना भेल आ कोन रूपेँ चलैत आजुक सीमापर

आबि अँटकल अछि। कोन तरहक पद्धति समाजमे चलै छल जइसँ समाज संचालित होइ छल आ अखन की भऽ रहल अछि। तैसंग मनमे ईहो विचार जगल रहैन जे साम्प्रदायिक बाढ़ि केना लोकक जीवनकेँ प्रभावित कइयो रहल अछि आ करबो केलक, से सभ चरितरकेँ कहि दिऐ। मुदा हमर (अपन) आँट-पेट देखि आकि कोनो दोसरे कारणेँ बिमलदेव काका विचारकेँ रोकि देलकैन, से तँ ओ अपने जनता मुदा तैयो दोहराकऽ बजला-

"आमक विषयमे किछु कहलह, चरितर?"

बजलौं-

"काका, बुझले अछि जे आम सन फल दुनियाँमे केतौ ने अछि। एक-पर-एक आमक गुणो आ सुआदो अछिए। दुनियाँमे जेतेक किस्मक फल सभ मिलाकऽ हएत तेते मिथिलाक एकटा आम अछि। जेतेक किस्म आ किस्मक गुण सभ मिलाकऽ दुनियाँमे अछि तेते मिथिलाक एकटा आम अछि।"



शब्द संख्या : 1538, तिथि : 04 जून 2022

पाक मास्टर

आइसँ पूर्व धरि माने पाँच बरख पूर्व धरि, जहिना सारस्वतपुरकेँ दसकोसीक लोक आदरसँ देखै छला तहिना आइ भोजपुर सेहो दस कोसक लोकमे आदर पेब रहल अछि। समाज आ बेकतीमे यएह ने सम्बन्ध-सूत्र अछि, जे समाजसँ बेकती आ बेकतीसँ समाज निर्माण करैए।

सारस्वतपुरकेँ दसकोसीमे आदर पबैक अपन इतिहास अछि आ भोजपुरोक अपन इतिहास अछि। ओना, जहिना सम्बन्ध-सूत्र, माने बेकती आ समाजक बीच, बनल अछि तहिना विघटनक रूप नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। जँ से नहि अछि तँ एक्के गाममे पुरुख-महापुरुखसँ लऽ कऽ कुपुरुख, मुँहपुरुख धरि नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए।

सारस्वतपुरक अपन इतिहास ई रहल जे लक्ष्मीनाथ नामक एक बेकती, दू साए बर्ख पूर्व भेल छला। लक्ष्मीनाथ ऐठामक समाजक दशा-दिशा देखि परिवारकेँ छोड़ि समाजमे सन्निहित भऽ गेला। अपन साध भरि साधना करैत पूर्ण जिनगी प्राप्त केलैन। ओना, वृहद रूपमे देखबै तँ मनुक्ख अपूर्ण अछिए, ओ पूर्ण कहियो ने भऽ सकैए। जेकर फलाफल सारस्वतपुरक समाजपर पड़ल आ दसकोसीमे जागल गाम जकाँ जगजियार भेल।

भोजपुर गामक अपन इतिहास बनि रहल अछि। आजुक परिवेशमे समाजक बीच भोज-भातक चलैन पूर्वक अपेक्षा केतेको

गुणा बढ़ल अछि। मोटा-मोटी यएह बुझू जे साए आदमीकेँ भोजन करबैक ओकाइत गाममे दू-चारि गोरेकेँ छेलैन, जे अखन शत-प्रतिशत तँ नहि मुदा पचास प्रतिशतसँ ऊपरक लोककेँ भइये गेल अछि। पूर्वक समाजमे पैघ काज, माने एकसँ ऊपरक काज ले समाजक जरूरत पड़िते छल। समाजक बीच भानस-भात करैक दायित्व छेलैन्हे आ समाजक लोक करितो छला। ओना, समाजक बीच जातिक छिन्न-भिन्न भेल समाज अछिए। सभ तरहक लूरि सभ जातिक बेकतीकेँ सेहो नहियेँ छल। मुदा सोल्होअना नहियेँ छल सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर जे अछि से अछि, भोजपुरक पहचान कोन रूपमे भऽ रहल अछि, अखन बस तेतबे।

सात बरख पूर्व सुन्दरलाल मुम्बइमे एकटा होटलमे भनसियाक (कूकक) काज करै छल, घड़ी देखि कऽ आठ घन्टा तँ नहि मुदा कीचेन घरक भार रहने काजक समैये बेठेकान भऽ गेल छेलइ। दिन-रातिक भार पड़ि गेल छेलइ। नव-नव तकनिकी (टेकनोलॉजी) भेने काजमे असानी सेहो अबैत गेल। तैसंग अपन आकर्षणसँ आकर्षित सेहो सुन्दरलाल भइये रहल छल।

होटलक देशी-विदेशी खेबैयाक हाथे भोज्य विन्यास बनबैक क्रममे सुन्दरलालकेँ केतेको पुरस्कार सेहो भेट चुकल छल। किछु खास विन्यास बनबैक एहेन कला सुन्दरलालमे अछि जे दोसर-तेसरमे ओइ स्तरक नहि अछि। कोनो वस्तुक गुण आ सुआद केना सुन्दर-सँ-सुन्दरतम बनत, एहेन विचारक जागरण सुन्दरलालक मनमे भऽ चुकल छल। जेकर फलाफल छल लोकक मुहेँ अपन प्रमाणित सर्टिफिकेट।

केतबो बेकतियो आ समाजो उलटमुँह किए ने भऽ गेल अछि मुदा सोल्होअना भऽ गेल अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जँ से

भऽ गेल रहैत तँ समाजमे एहेन केना भऽ रहल अछि जे जइ समाजमे एक दिस साए तक गिनती आ 'अ'-'आ' सँ 'ह' तक अक्षरक बोध नहि अछि आ दोसर दिस ओइ समाजमे वैज्ञानिक, दार्शनिक, अन्वेषक नहि छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो तँ अछिए। तहिना आर्थिक क्षेत्रमे सेहो अछिए जे किछु परिवार टुटि-टुटि, खसि-खसि मटियामेट भइये गेल आ भइयो रहल अछि तँ किछु परिवार आगिक लपेट जकाँ धुधुआ नहि रहल अछि सेहो बात नहियेँ अछि।

सात बरख पूर्व सुन्दरलालक मनमे गामक प्रति आकर्षण तखन जगलै जखन अपन उजरल परिवारकेँ पुन: जगजियार करैक विचार मनमे उठलै। समाज तँ समाज छी जैबीच जीवितसँ मृत्युधरिक बीच कर्ता अपन कृति देखैबते छैथ। माने ई जे जीवित तँ जीविते भेला, मुइला पछातियो 'फल्लाँ भैया', 'फल्लाँ काका', 'फल्लाँ बाबा'क चर्च होइते अछि जे, जे गुण हुनकामे छेलैन ओ अखन तक नहि भेल। तैसंग काजक विषयक चर्च सेहो कएले जाइए। माने, अमुख काजे आकि विचारेक चर्च उठैत ओ मर्मपूर्ण नहि बनै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। तँए ने एक दिस 'जोतषी भाय', 'जोतषी काका' आ 'जोतषी बाबा'क रूपमे आइयो ओहिना ठाढ़ भेल ऐगला पीढ़ीकेँ रस्ता देखा रहला अछि जेना आँखि तकैत देखबै छला। मुदा दोसर दिस समाजसँ बौक, बकलेल कि ढहलेले मेटा गेल सेहो बात नहियेँ अछि, भरमार रूपमे अखनो अछिए।

सात बीघा जमीनबला किसान परिवारमे सुन्दरलालक जन्म, आइसँ पैंतीस बरख पूर्व भेल। सुन्दरलालक बाबा गोविन्दलाल अपन बाहिँक बलेँ छअ बीघा जमीन अरजलैन, एक बीघा पिताक देल छेलैन।

रौदी-दाही मिथिलाक जनमाउ रोग आइये नहि सभ दिन रहल अछि। तैसंग एगारहमी शताब्दीक पछाइत जे जमीन्दार आ महंथानाक खेल चलल, जे किछु अंशमे अखनो अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहउ। भोजपुरक अपन इतिहास अछि। आन गाम जकाँ भोजपुरक इतिहास नहि अछि जे कानमे फुस-फुसाकऽ, एकर माने फुसियाएब नहि बुझब, भैयारीमे फसाद ठाढ़कऽ देब आ धर्मक नामपर मन्दिरमे दान करा महंथाना पकैड़ लेब।

पिताक अमलदारीक लधल निलामीक झगड़ा रूपलालक पिताक छी। परोछो भेलापर लधले रहलैन। गोविन्दलाल अपन कबलैतीसँ एते केनहि छला जे अपन जमीन जमीन्दारक हाथमे कहियो नहि जाए देलैन, मुदा कोट-कचहरीक लफड़ा नहि लगल रहलैन, सेहो बात नहियेँ छल। पिताक देल जमीनक संग कोट-कचहरीक केस-मुकदमा अपना ऊपर रूपलाल लेलैन। ओना अखन तक माने गोविन्दलालक समय तक, कोट-कचहरीमे मुकदमा लटकल रहल आ जमीन गोविन्दलालक कब्जेमे रहलैन से टुटिकऽ निच्चाँ खसि पड़लैन। रूपलाल एकभग्गू लोक, माने गोविन्दलाल (पिता) जकाँ खेतसँ कोट-कचहरी तक धुड़फन्दा करै-चलैबला नहि। खेतक बीच मेहनत करैमे रूपलालकेँ अपूर्व आनन्द अबैत रहैन तइसँ कोट-कचहरीसँ घिरना सेहो होनि आ लूरि-बुधि नहि रहने नीक पछाड़ सेहो खेलैन। माने घराड़ी छोड़ि, बाँकी सभ जमीन जमीन्दारक अधिकारमे रूपलालक चलि गेलैन। एकाएक हाथसँ अपन सम्पैत बिलटने रूपलाल बिलटल लोक जकाँ समाजमे ठाढ़ रहला। अपन खेतीक लूरिक बलेँ रूपलाल दुनू परानी अनुभवी खेत बोनिहारक रूपमे समाजमे ठाढ़ रहला।

सुन्दरलालक जखन जन्म भेल, छठियारीक राति जखन

परिवारसँ लऽ कऽ समाजक दाइ-माइ एकठाम बैस, विधि-विधानक चर्च करैत नामकरण केलैन तखन बच्चाक नाओं ‘सुन्दरलाल’ रखलैन। नामकरण करैकाल तीन तरहक विचारधारापर दाइ-माइ विचार केलैन। पहिलधारा पूर्वसँ अबैत परिवारक पुरुषपनक धारा, दोसर- नाना गामसँ अबैत धारा, ऐठाम नाना गामक माने ई नहि बुझब जे केतौ किछु ने, आ तेसर समुदायक बीचक धारा। अखन से नहि, अखन बस एतबे जे सुन्दरलालक नामकरण वंशगत भेल, माने गोविन्दलाल, रूपलाल आ सुन्दरलाल।

सात बर्खक अवस्थामे माए-बापक सन्तान सुन्दरलाल, सुनरा बनि महींसवारि शुरू केलक। गामेक एकटा किसानक ऐठाम सुनरा महींसवारिसँ जीवनक नोकरी शुरू केलक।

पाँच बरख बितला पछाइत, माने पाँच बरख धरि महींसवारि केलाक बाद, सुनरा बारह बर्खक भऽ गेल। अपन सन एकउमेरियाकेँ मुम्बइ, बंगलोर, दिल्ली, कोलकातामे नोकरी करैक बात सुनरा सेहो सुनए-गमए लगल। सुनए लगल जे मास दिनक कमाइ जेते होइए ओते एक्के दिनमे लोक कमाइए। मनमे उठैत विचारकेँ सुनरा मनेमे ताधैर दबने रहल जाधैर अपन जिनगीक रक्षक नजैरपर नहि चढ़लै। संयोग बनल, सुन्दरलालक ममियौत भाय सुन्दरलाल ऐठाम आएल। पच्चीस-तीस बर्खक उमेर सोनाइक। मुम्बइमे अन्तर्राष्ट्रीय होटलमे बेराक (बाबर्ची) काज करैए। बी.ए. पास सेहो अछि सोनाइ। सुन्दरलाल बाजल-

“भैया, हमरो अपने संगे नेने चलह।”

तइसँ पूर्व दुनू परानी रूपलाल सेहो सोनाइक मुहसँ अपन कमाइक चर्च सुनि नेने छला। देह-दशा-लत्ता-कपड़ाक रूप देख, दुनू परानीक मन सोनाइक जीवनसँ मोहित भइये गेल छेलैन जे जहिना

सोनाइ गाम छोड़ि पाँचे बर्खमे एते उन्नति कऽ लेलक तहिना अपनो उन्नति सुन्दरलालसँ भऽ सकैए।

सुन्दरलालक बातकेँ सोनाइ गम्भीरतासँ लेलक। अपन होटलक बीच काज देखि अपनाकेँ विश्वस्त केलक जे सुन्दरलाल अखन अनाड़ी अछि, तहूमे पढ़ल-लिखल नहि अछि जे पढ़ियो कऽ बुझि सकैए। नजैर खिड़बैत सोनाइक मन मानि गेलइ जे टेबुलमे पोछा लगबैक काज सुन्दरलाल कऽ सकैए। सोनाइ बाजल-

"बौआ सुन्दर, अखन माए-बाप सोझामे छथुन, तँए पहिने हुनकासँ ने आदेश लऽ लिअ पड़तह।"

'माए-बाप' सुनि दुनू परानी- रूपलालक देह भुल-भुला गेलैन। मन मानि लेलकैन जे जखन सुन्दरलाल गामोमे अपने कमा कऽ पेट भरैए, तखन दुनियाँमे केतौ जा पेट पालत तइमे हम किए मनाही करबै। रूपलाल बजला-

"बौआ सोनाइ, तोरा मुम्बइ धांगल छह मुदा सुन्दरलाल तँ से नहि अछि। जँ भार उठा सुन्दरलालकेँ लऽ जेबहक ते लऽ जाहक।"

पोछा लगबैसँ सुनदरलाल होटलमे काज शुरू केलक। जेना-जेना सुन्दरलालक उमेर बढ़ैत गेल तेना-तेना शरीरक कांतियो आ बौधिक गुणो सुधरैत गेलइ। पोछा शुरू केलाक दू सालक पछाइत सुन्दरलाल टेबुलपरक कप-प्लेट उठबए लगल। कप-प्लेट उठबैक क्रममे दरमाहाक अतिरिक्त किछु बाहरियो आमदनी हुअ लगलै। होटलक काज देखि सुन्दरलालक अपनो मन जगलै जे भानस माने भोज्य-विन्यास करै-बनबैक लूरि जखन सीख लेब तँ दरमाहो बेसी हएत आ खेबो-पीबो मन माफित हएत।

होटलसँ जहल तक, चाहे मुम्बइ हुअ कि बंगलोर आकि दिल्लीए मैथिलसँ भरल अछिए। गामक बगले गामक, माने

भोजपुरसँ सटले जौनपुरक, हेड मिस्त्री, माने कूक, रहबे करइ, जानो-पहचान भइये गेल छेलइ। सुन्दरलाल कूकक काज करए लगल।

समैयक गति जहिना चलैए तहिना जीवनोक गति चलिते अछि। पैंतीस बर्खक उम्रक पछाइत सुन्दरलाल गाम आबि चौकपर 'मुम्बै ढाबा' सेहो खोलने अछि आ गाम-समाजमे भोजक भानस सेहो करए लगल।

जखन पहिल दिन सुन्दरलाल हरदेब काका ऐठाम बरहबरना भोजक विन्यास बनौलक तहियेसँ सुन्दरलालक झण्डा उठल।

आजुक तिथिमे समाजक बीच एक नव कारोबारक परिस्थिति बनियेँ गेल अछि। ओ अछि वस्तु-विन्यास बनबैक लूरि। अखनो सुन्दरलालकेँ मुम्बइक किछु परिवारक एहेन सिनेह अछिए जे गामसँ किछु वस्तु मुम्बइक महलमे जाइते अछि।

सात बर्खक सुनरा 'सुन्दर भाय' होइत 'सुन्दर काका'क नाओंसँ समाजक समुद्रमे ओहिना हेल रहल अछि जहिना लक्ष्मीनाथ सारस्वतपुरमे हेल रहला अछि। दुनियाँक मर्म तँ तखने ने मार्मिक होइ छै जखन ओ मर्म लोक कर्मसँ क्रमित होइत बुधि-विवेकमे आनि उठिकऽ ठाढ़ हुअ चाहैए।



शब्द संख्या : 1387, तिथि : 07 जून 2022

साइंस टीचर

हरेकृष्ण बाबूकेँ पाँच कोसक लोक जनै छैन। नीक परिवारमे माने नीक कुल-शील परिवारक संग चालीस-पचास बीघा जमीनक सम्पैत सेहो छैन। नीक परिवार, माने सुभ्यस्त परिवारमे जन्म नेने हरेकृष्ण बाबूकेँ पढ़ै-लिखैक क्रममे ओना कहियो ने भेलैन जेना मइटुग्गर बपटुग्गर आ धनटुग्गरकेँ होइ छैन जे जानक बाजी लगा जीवनमे जान अनै छैथ।

बहुत नीक रिजल्ट नहि माने हाइस्कूलसँ कौलेज धरिमे, अनला पछातियो नीक विद्यार्थी तँ रहबे केलाह जइसँ हरेकृष्ण बाबू हाइ स्कूलक शिक्षक बनला। बी.एस-सी.मे नीक रिजल्ट भेल छेलैन। नीक रिजल्ट होइक पाछू कारण छेलैन जे रटनमा आदत हरेकृष्ण बाबूकेँ हाइये स्कूलसँ धऽ नेने छेलैन। ओहन रटनमा तँ नहि छला जेहेन सौंसे तुलसी कृत्त रामायण रटि नेने छैथ, तँए कहब जे हरेकृष्ण बाबू साधारण रटनमा छला सेहो बात नहियेँ अछि। संक्षेपमे बनल सूत्रक कोन बात जे पन्नाक पन्ना नहि रटै छला सेहो बात नहियेँ अछि।

गामक, माने ललितपुर गामक सभसँ श्रेष्ठ परिवारक रूपमे हरेकृष्ण बाबूक परिवार आइये नहि, केता पीढ़ीसँ चलैत आबि रहल छैन। परिवारमे प्रतिष्ठा पबैले परिवारक नीक बेवहारक संग नीक विचारक संस्कार आनए पड़ैए। देखिते छी जे समाज समुद्रोसँ अथाह गहींर अछिए, चाहे ओ काजक रूपमे हुअए आकि शील-गुण-

विचारक रूपमे हुअए। समाजमे जहिना एक दिस भागवत-पुराणक पाठ होइते अछि, जेकर पाठकर्ता सेहो छथिए, तहिना दोसर दिस बैंकक डकैती, गाड़ीक छिना-झपटी आदि-आदिक पाठ नहि होइए, माने सिखौल नहि जाइए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो सिखौल कि बनौले जाइए। समाजमे ऋषि, मुनि, योगीक संग चोर, डकैत, लुच्चा-लम्पट सभ अछिए, माने सबहक पाठ नहि पढ़ौल जाइए, से नहि। एहेन जे हरनमा समाज अछि तैठाम सीता सन पतिव्रताकेँ ताकि लेब ओ एकटा रामक कोन बात जे सातोटा राम बुते नहि हेतैन। खाएर जे हेतैन, ई तँ शास्त्र-पुराणक बात भेल, मुदा हरेकृष्ण बाबूक परिवारक अप्पन शील-सोभाव रहलैन अछि।

हरेकृष्ण बाबूक पिता शीलानन्द बाबूमे मानवीयताक ओहन शील-सोभाव रहलैन जे मनुक्खक आगूमे धन-सम्पतिक महत्वकेँ कम बुझै छला। अही सोभावक चलैत शीलानन्द बाबू समाजमे विरोधी रूपमे मानल गेला, जेकरा तोड़-जोड़ करैत समाजक विरोधी बना देल गेलैन, मुदा तेकर परवाह नहि करैत शीलानन्द बाबूमे तीनटा देखार रूपमे समाजसँ हटल गुण रहबे करैन। पहिल, चालीस-पचास बीघा जमीन रहने, केतबो पछुआएल गृहस्थी माने खेती किए ने हुअए मुदा चारि-पाँच बखारी धान शीलानन्द बाबूकेँ भइये जाइन। गामक जीवनक कि दशा छल सभ जनिते छी। एक बखारी धान रखि सभ धान सवाइपर माने एक मन धानक सवा मन, लगाबैथ। समयानुकूल धानक असुली हेबो करैन आ नहियोँ होइन। शीलानन्द बाबू अपन जीवन चलबैले अपन जीवन सूत्र गढ़ने छला। जँ कोनो कारणेँ धानक असुली पछुआ जाइ छेलैन तँ मूड़क-मूड़ वा विकट स्थिति देखि ऋण मुक्तो कऽ दइ छेलखिन।

दोसर गुण छेलैन जे रस्ताक बगलेमे निचरसे दरबज्जा बनौने छला, दुपहरक पछाइत शीलानन्द बाबू बैइसै छला। रस्ता धेने जे

कियो राही-बटोही जाइथ तिनका आग्रह करैत कहै छेलखिन-

“केतए जाएब, आउ कनी सुसता लिअ।”

जेहने चौड़गर दरबज्जाक ओसार छेलैन तेहने चौड़गर मोथीक सोंफ (सोंफ माने नमगर-चौड़गर ओछाइन) स्थायी रूपसँ बिछौले रहै छेलैन। मनसँ ई शंका हटा नेने छला जे केकरो यात्रा काल नहि टोकिऐ, ओ केते उचित अछि आ केते अनुचित तेकरा अप्पन बुधिक अनुसार निर्णय कऽ नेने छला जे किछु यात्री ओहन होइ छैथ, जिनका टोकब अनुचित भऽ सकैए, मुदा सभ यात्री ओहने छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। एहनो तँ कहैक चलैन अछिए जे बेर-बिपैतमे कियो-केकरो पुछनिहार नहि होइ छैथ। भाय, समाज छी किने, भिखमंगो बनबैक शक्ति अपना पेटमे रखने अछि आ महादार्शनिक, महापुरुष बनबैक शक्ति नहि रखने अछि सेहो बात नहियेँ अछि। खाएर जेतए जे अछि मुदा पएरे चलनिहार यात्री तँ गामे वा गामक बगले समाजक हेता, तँए हुनका टोकब अनुचित नहियेँ हएत, शीलानन्द बाबू निधोकसँ राहीकेँ पुछि दइ छेलखिन-

“कहाँ रहै छी?”

“फल्लाँ गाम वा फल्लाँ टोल।”

“की हाल-चाल गाम-टोलक अछि?”

कहैत शीलानन्द बाबू अपन हाथक इशारासँ लगमे आबि बैइसैले सेहो कहथिन।

तेसर गुण रहैन जे अपन बात ओहने भाषामे बाजैथ जेहेन भाषा सुननिहारक होइ। भाषो तँ पेंचीदा अछिए। बिनु बुझल-गमल लोक ठकाइते अछि। गप-सप्पक क्रममे शीलानन्द बाबू ओइ तह तक जाइक कोशिश करै छला जेतए ओकर बुनियाद अछि। जइसँ एते लाभ होइते छेलैन जे एक दिस शीलानन्द बाबू घर बैसल

ज्ञानार्जन करै छला तँ दोसर दिस सुननिहारोकेँ किछु-ने-किछु रास्ता भेटिये जाइ छेलैन।

पिताक बनौल एहेन परिवारमे हरेकृष्णक जन्म भेल छेलैन तँए परिवारक बनल पवित्रधाराकेँ जीवित रखैत हरेकृष्ण बाबू साइंस टीचरक रूपमे घरसँ दस कोसक दूरीपर नोकरी पकड़लैन। पुरना दस कोसक दूरी अखन तीस किलोमीटर बूझू। रास्ताक दूरी देखि अपने माने हरेकृष्ण बाबू, स्कूलक बगलेमे रहैक डेरा लेलैन। हाइ स्कूलक होस्टलोक नीक बेवस्था नहियेँ छल। केतौ नीको छल, जैठाम खाइ-पीबैले 'मेस' चलै छल, मुदा एहनो तँ छेलैहे जैठाम ने होस्टल छल आ ने मेसे चलै छल। खाएर जे छल, जेतए छल से छल। आजुक तँ एहेन परिस्थित बनियेँ गेल अछि जे हाइ स्कूल तक ने विद्यार्थीएकेँ आ ने शिक्षकेकेँ बाहर रहैक जरूरत रहल अछि।

अपने हाथसँ अपन भोजन हरेकृष्ण बाबू बनबै छला। जइसँ भानसक वर्तन सेहो मँजै छला। ओना, सुभ्यस्त परिवार रहने गामोसँ खेबा-पीबाक अधिकांश वस्तु पहुँचते छेलैन। हाइ स्कूलक आर्थिक स्थिति नीक नहि रहने प्रधानाध्यापककेँ अढ़ाइ साए आ सहायक शिक्षककेँ डेढ़ साए रुपैआ वेतन भेटै छेलैन।

शिलानन्द बाबूकेँ पाइक खगता रहबे ने करैन तँए हरेकृष्णकेँ कहि देलखिन-

"बाउ, ऐगला परिवार अहाँक हएत तँए अपन कमाइ संचित करैत चलू।"

स्कूलमे जे जे विषय पढ़बैक भार छेलैन तेकरा हरेकृष्ण बाबू रटि नेने छला। तँए पढ़बैकाल किताबक जरूरत नहि होइन। ओना, किछु विषय, जेना साहित्यमे किताबक जरूरत होइते अछि, मुदा अधिकांश विषय एहेन अछि जे बिनु किताबोक शिक्षक पढ़ैबते छैथ।

विद्यालयक अतिरिक्त समयमे जरूरतमन्द विद्यार्थीकेँ हरेकृष्ण बाबू डेरोपर बिनु पाइक पढ़बै छला। अपन शील-सोभावसँ हरेकृष्ण बाबू अपन प्रतिष्ठा अरैज नेने छला। पचकोसीक लोक जनै छैन जे अपन नोकरीक जीवनमे हरेकृष्ण बाबू एते तँ करबे केलैन जे अपन छोट भाइक संग अपन बालो-बच्चाकेँ पढ़ा-लिखा, बिआह-दान करा अपन परिवार बनाइये देलैन।

तीस बरख पूर्व शीलानन्द बाबू मरि गेला आ तेकर पाँच बर्खक पछाइत पत्नी सेहो मरि गेलखिन। ओना, हरेकृष्ण बाबूकेँ दसे साल नोकरी शेष छेलैन। साइठ बर्खक उमेरमे सेवा-निवृत्त भइये जेता। छोट भाए इंजीनियर बनि शहर पकैड़ लेलखिन।

अखन धरि अबैत हरेकृष्ण बाबूक परिवारक बेवहारमे एकाएक धक्का लगल। ने खेती करैबला कियो रहला आ ने दरबज्जापर अपन अबैत सामाजिक सरोकारकेँ जीवित रखैले कियो रहलैन। हरेकृष्ण बाबू बेटी बिआह सम्हारि सासुर बास करा देलैन आ दुनू बेटा स्कूल-कौलेज धऽ लेलकैन।

मोटा-मोटी परिवारमे हरेकृष्ण बाबूक पत्नी फुलकुमारी पद्मिनीक रूपमे परिवारमे रहलखिन। कुटुमो-परिवारसभ अनदिना, ऐठाम अनदिनाक माने अछि पारिवारिक पैघ काज नहियोँ रहल आ जहिना सामान्य ढंगसँ आएब-जाएब चलैए से, आएब-जाएब छोड़िये देलैन। आब ओ समटा कऽ एकठाम भऽ गेलैन। जे श्राद्धे-बिआह तक रहि गेलैन।

दस सालसँ, माने सेवा-निवृत्त भेला पछाइत, हरेकृष्ण बाबू गाममे रहि रहला अछि। अस्त-व्यस्त परिवार एहेन भऽ गेलैन, जे दू भैयारीक बीच घर-घराड़ी अछि। तैठाम फुटाकऽ घर-बनाएब केहेन हएत। सामाजक परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जे बेकती-बेकती,

परिवार-परिवारकेँ पकड़नहि अछि। एकटा अंग्रेजक फर्मूला सुनै छिऐ- 'फूट डालो शासन करो', मुदा गाम-गाममे की एहेन देशी फर्मूला नहि अछि? जँ नहि अछि तँ परिवार-परिवार, बेकती-बेकतीमे एते मतान्तर किए अछि?

आजुक एहेन परिवेश बनले जा रहल अछि, जेना सातमी शताब्दीमे छल। ओना, मूर्ति निर्माणक कला अपना ऐठाम हजारो बरख पूर्व पूर्वज सीख नेने छला आ बनैबतो छला।

आने गाम जकाँ ललितपुरमे सेहो विसहारा स्थानक जागरण शुरू भेल, जे अखन तक एकटा गाछक निच्चाँमे पीड़ी बना पूजल जाइ छेली। मुम्बइक परसादे आठ-दस परिवारक एहेन जागरण भेल जे ललितोपुर दसटा तीन-मंजिला मकानक गाम बनल।

गामक विसहारा स्थानमे बैसार भेल। स्थानक कर्ता-धर्ता तँ कियो रहबे करता। गाममे अधिकांश लोक ओहन भइये गेल छैथ जे गाम-घर छोड़ि परेदशमे छैथ। गाममे रहनिहार हरेकृष्ण बाबू छैथ, तँए ई भार गौंआँ हुनके ऊपर लादैक विचार केलैन।

बैसारक बीच हरेकृष्ण बाबूकेँ कहल गेलैन-

"अपने पूर्ण भार स्थानक लियौ।"

हँसैत हरेकृष्ण बाबू स्वीकार करैत बजला-

"जाबे जीबै छी ताबे तकक भार लेलौं।"

सर्वसम्मति थोपड़ीसँ हरेकृष्ण बाबूक स्वागत भेलैन।

बैसारक समाचार सुनि मनमे भेल जे साइंसक शिक्षण विद्यार्थी-सँ-शिक्षक धरिक जीवनधारण केनिहार एहेन हूसल काजक भार किए लेलैन? मुदा अपनाकेँ संयमित राखि, साँझूपहर आत्मानन्द काका ऐठाम पहुँच पुछलयैन-

“काका, गामक बैसारक समाचार तँ सुननहि हेबइ?”

बुझल-निर्भिक जकाँ आत्मानन्द काका बजला-

“किए ने सुनबै। हम कि गाममे नइ छी जे गामक बात नइ बुझबै।”

“केतेक उचित हरेकृष्ण बाबू केलैन?”

जहिना पुछलयैन तहिना रटल फर्मूला जकाँ आत्मानन्द काका धाँइ-दे बजला-

“अखन साँझ भेल जा रहल अछि, भोरमे कहबह।”



शब्द संख्या : 1301, तिथि : 10 जून 2022

इज्जत लऽ लेलक

रातिमे किछु अबेर-क सुतने, उठलो ने रही कि कमला दादीक आवाज नीन तोड़लक। भकुआएले ओछाइन छोड़ि चौकैठसँ आगू बढ़लौं कि कमला दादीक मुँहक स्पष्ट गारि सुनलौं। गारि छल-

“राँड़ी इज्जत लऽ लेलक.!”

कमला दादी ओहन जातिक परिवारमे छैथ जइ जातिक परिवारमे विधवा-बिआहक चलैन नै अछि। कमला दादीक बिआह कृष्णपुरक ओहन परिवारमे भेलैन, जइ परिवारमे कट्ठा भरि घराड़ीक अतिरिक्त किछु नहि छेलैन। मुदा समाजो तँ समाज छी। गामक बीच सइयो रंगक विचारो गाममे चलिते रहैए आ कुम्हारक चाकक माटिक वर्तन जकाँ किछु फुटितो अछि तँ किछु टिकतो तँ अछिए।

गामक ओहन प्रवुद्ध वर्ग जनिका अपना तँ खेत-पथार कम छेलैन मुदा विचारमे प्रवलता तँ छेलैन्हे। गाममे पाही पट्टी माने बाहरी जमीन्दारक अधिक खेतो आ कचहरी-कामत सेहो छेलैहे। कचहरीक माने मालगुजारी असुलैक जगह आ कामतक माने खेती-पथारीक। दुनूक अपन-अपन काज छेलइ। सालक साल गामबलाक जमीन निलामपर चढ़ने मोटेबो करिते छेलइ। समाजक सहयोगसँ चन्द्रकान्तकेँ ओते खेत बटाइक रूपमे दऽ देल गेलैन, जइमे मेहनत करि चन्द्रकान्त, अनका खेतमे मजूरी (बोइन) करए नहि जाइथ। चन्द्रकान्तक बिआह कमला दादीसँ भेलैन। बिआहक दू सालक

पछाइत माने तेसरा साल दुरागमन सेहो भेलैन। आठ बर्खक पछाइत चन्द्रकान्त रोग ग्रस्त भऽ मरि गेला। तैबीच कमला दादीकेँ तीनटा सन्तान भेलैन। एकटा बेटा आ दूटा बेटी। कमला दादीकेँ खेतमे काज करैक लूरि, पतिकेँ देखा-देखी तँ किछु छेलैन, मुदा भानस-भात करैत आ बाल-बच्चाकेँ सम्हारैत-सम्हारैत कमला दादीकेँ पलखतिये (पलखति माने समयक काट) ने रहैन जे खेती-पथारीक काज करितैथ। किछुए दिनक पछाइत बटाइ खेत चलि गेलैन। कट्ठा भरि घराड़ीमे कमला दादी साधारण तीमन-तरकारीक खेती कऽ लइ छेली। कुभेला भेने दुनू बेटी मरि गेलैन। मात्र एकटा बेटाटा कमला दादीकेँ रहलैन। परिस्थितिवश जीविका चलबैले कमला दादी समाजमे (गाम-समाजमे) भीख मांगब शुरू केलैन।

कुसंयोग एहेन भेलैन जे कमला दादीक बारह बर्खक बेटा शोभितकेँ साँप काटि लेलकै। विषधर साँप दसे मिनटक पछाइत शोभित लटुआ कऽ खसि पड़ल। अनाड़ी कमला दादी, अचेत बेटाकेँ देखि अपनो अचेत भऽ खसि पड़ली। समाजक सहयोग भेटलैन। अड़ोस-पड़ोसक लोक आबि दुनूकेँ, माने माए-बेटा दुनूक, प्रतिकार करैक काज शुरू केलक। झाड़-फूकक युग रहले अछि, शोभित मरि गेल।

प्रतिकारक पछाइत कमला दादी आँखि ताकि जीवि तँ गेली मुदा दिमाग (ब्रेन) प्रभावित भऽ गेलैन। बताहि जकाँ करए लगली। बगए-वानि सेहो बताहि जकाँ बना कमला दादी दिवस गुदस करए लगली। कट्ठा भरिक खेती कमला दादीक आब लत्ती-फत्तीक एक-आध गाछपर चलि एलैन, माने परिस्थितिवश।

घरक आगूमे झिंगुनीक (झुंगनिक) लत्ती लगौने छैथ। अपना उठैसँ पहिने माने सुतिकऽ उठैसँ पहिने पारखी चोर झिंगुनी तोड़ि

लेलकैन। पारखी चोर ओ भेला आकि भेली जे तोड़ैसँ पहिने अखिआइस लइ छैथ जे भोरमे माने समयपर, तोड़ै जोकर भऽ जाएत।

झिंगुनी तोड़ए जखन कमला दादी गेली तँ डन्टीसँ टप-टप पानि चुबैत देखलैन, मुदा देखल झिंगुनी निपत्ता भऽ गेल छेलैन। आने स्त्रीगण जकाँ कमला दादी सेहो यत्र-कुत्र गरियाबए लगली। रंग-बिरंगक गारि मुहसँ निकैल रहल छेलैन। एक तँ ओहुना कमला दादीक बुधि विचलित भेने विवेकहीन भइये गेल छैथ। तैपर अपन मुँहक आहार छिनाएल–चोरीक माध्यमसँ–देखि आरो विचलन विवेकमे आबिये गेलैन। घरक बगलक जे पड़ोसिनी छैन, तिनकर नाम लगा गरियाबए लगली।

ओना, एहेन शंका, झिंगुनी तोड़ैक, कमला दादीक सोल्होअना निराधारे नहि छेलैन। अनरोखमे झिंगनी तोड़ैक दोख बहरबैयाक नहियेँ लगाएल जा सकैए। तहूमे बाहरसँ आएल रास्ताक बीचमे अनेको लोकक घर सेहो अछिए। तहूमे मिथिला छी, सघन आवादी अछिए। ओना, एक्के शब्दकोषक एक्के शब्द एकठाम शुद्ध भऽ जाइए तँ दोसरठाम अशुद्ध सेहो भऽ जाइते अछि। कोट-कचहरी जाइबलाक मामलामे राही-बटोहीकेँ टोकब अधलो भऽ सकैए। किए तँ कियो चुपचाप अपन केशमे जमानत करबए जाइत होथि, मुदा टोकला उत्तर देला पछाइत जँ ओ भेद खुजि जाइ आ जमानतमे विरोध भऽ जाइ, जइसँ बेचारा जहल चलि जाए। ऐठाम तँ अशुभ कहियौ कि अशुद्ध भेबे कएल। मुदा एकर विपरीत एहनो जगह तँ अछिए जे कियो सबेरगर कोनो डॉक्टर ऐठाम जाइत होथि, पाइ-कौड़ी वा संगीक अभाव होनि तैठाम टोकला पछाइत जँ मददगार भेट जाइ छैन तँ ओ शुभ वा शुद्ध भेबे कएल किने।

नाम लऽ कऽ जेकरा कमला दादी गारि पढ़ैत रहैथ ओ झिंगुनी चोरा कऽ नहि तोड़ने रहैन। दोसर बगलेक पड़ोसिनी तोड़ने रहैन। अपन नाम सुनि पड़ोसिनी कमला दादीक लग आबि गारिक उत्तर गारिसँ दिअ लगलैन। जइसँ दुनूक बीच गारि-गरौवलि जोर पकैड़ लेलक। तइ बीचमे एकटा आरो भेल, ओ भेल जे कमला दादीक जे झिंगुनी तोड़ने रहैन ओ पड़ोसिनीकेँ, माने कमला दादीक पड़ोसिनीक, संग पूरए लगली। विचित्र दुश्मनक बीच कमला दादी घेरा गेली। ओना, कमला दादीक अनुमान सोल्होअना ठीक छेलैन, मुदा गड़बड़ एतबे भेल छैन जे जे पड़ोसिनी झिंगुनी तोड़ने छैन, तिनकर बदला दोसरकेँ गारि पढ़लखिन। ओना, गामक सुबुध लोक कमला दादीक गारिकेँ गारिक माइनसँ निच्चाँ बुझै छैथ, किए तँ सभ जानि रहला अछि जे कमला दादीकेँ प्राण बँचल छैन, बाँकी जिनगीक कोनो हारक हार बाँकी नइ छैन, मुदा से बुझनिहार कए गोरे छैथ।

दुनू पड़ोसिनी, माने एकटा जे कमला दादीक झिंगुनी तोड़ने छेलैन आ दोसर जे नइ तोड़ने छेलैन, दुनूक बीच एक दल बनि गेल। एकर माने ई नहि जे समाजक बीच अपराधी आ महंथक बीचक दल वा पार्टी बनि गेल। असगर कमला दादी एकभागक एक दल भेली आ दोसर दल दू गोरेक भेलैन। अपन जीवन, ऐठाम जीवनक माने भोजनसँ अछि, देखि कमला दादी पाछू हटैक, माने मुँहक आहार छिनाइत देख, दुस्साहस नहि केली तँए असगरो रणभूमिमे ठाढ़ रहली। मनमे मिसियो भरि एहेन विचार नहि उठि रहल छेलैन जे हमरा सन लोक, माने पति विहीन, पुत्र विहीन, परिवार विहीन लोक, आइये नहि सभ दिनसँ ऐ धरतीपर गारि-मारि खाइत रहल अछि, हमहूँ खाएब। एक तँ ओहुना देखै छी जे एकटा शिखरक पुड़िया माने गुटका, खेने नवका तूरकेँ हाथी जकाँ सनसनी आबि जाइ छैन

तैठाम दूटा पड़ोसिनीक सामूहिक शक्ति तँ उफनबे करतैन। दुनू आगू बढ़ि कमला दादीकेँ दू थापर लगा देलकैन। चलाकी ईहो दुनू केने रहैथ जे दुनू अपन एक-एक हाथसँ कमला दादीक दुनू हाथ पकैड़ नेने रहैन।

'इज्जत लऽ लेलक' सुनि अपने मन धिरकारए लगल जे समाजमे केकरो कियो इज्जत लूटि रहल अछि आ अपने चुपचाप मुँह देखैत रही, ईहो केहेन हएत।

गंजी पहीर गमछा कन्हापर राखि विदा हुअ लगलौं कि पत्नी टोकि देली-

"अनेरे किए मौगी-मेहैरिक भाँजमे पड़ै छी।"

पत्नीक विचारकेँ चुपचाप सुनि विचार केलौं जे जँ किछु उत्तर देबैन तखन ने उत्तर-प्रति-उत्तर हएत जइसँ नीको विचार वा रास्ता चलैसँ बाधित हएत, मुदा किछु नहि बाजब से तँ हएत। पत्नियोँ बुझती जे कमला दादी ऐठाम नहि केतौ दोसरेठाम जाइ छैथ। तैबीच मनमे ईहो उठि रहल छल जे गामो-समाज तँ गामे-समाज छी, ने मजगूत सिंघे छै आ ने कैंतगर (कान्तिगर) नाङैरिये छै, कखन-केमहर सिंघे डोला देत आकि नाङैरिये डोला देत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। देखतो छी आ सुनितो तँ छीहे जे 'जेकरा ले चोरि करी सएह कहै चोरा।' केकरो अन्याय देखि ओकरा बोल-भरोस दैत उठा कऽ ठाढ़ करैक कोशिशो करब आ उनटा कऽ वएह कहए लगत जे फल्लाँ, उनटा-पुनटा सिखा कऽ मारि करबए चाहै छल। भाय, जाबे अन्यायक खिलाप न्याय मरै-मिटैले तैयार नहि हएत ताबे अन्याय मरि केना सकैए। एकक मृत्युक पछातिये ने दोसरमे जीवनक जान औत। गारिक जवाब गारि हएत, थापर-मुक्काक जवाब थापर-मुक्का हएत, मुदा जीवनक दासताक उन्मूलन तँ दास्तानक उन्मूलन

केनहि ने हएत। ओना, विचारक दौड़मे मन आगू-पाछू जरूर करए लगल मुदा मानवीय मन पाशवीक (पशुवीय) मनकेँ पाछू धकेल एते उत्साह जगाइये देलक जे मने-मन विचारैत चुपचाप मुँह बन्न केने कमला दादी ऐठाम विदा भेलौं।

मारि खेला पछातियो कमला दादीक मुँह बन्न नहि भेल छेलैन। मुदा सुननिहार कियो ने छेलैन। दादी लग पहुँच पुछलयैन-

“दादी, की भेल हेन?”

मिसियो भरि मनमे शंका नहि रहल जे कमला दादीक मन जीवनक थपेड़मे थपड़ा वा थोपड़ा गेल छैन।

‘की भेल’ सुनि आकि हमरा आगूमे ठाढ़ देखि कमला दादीकेँ केते हाथीक (हाथक) बल भेट गेलैन से तँ कमले दादी जनती मुदा एते तँ सुनबे केलौं-

“सँएखौकी इज्जत लऽ लेलक.!

बेटखौकी इज्जत लऽ लेलक..!!”

ओना, दुनू पड़ोसिनी, जे मारने रहैन, अपन-अपन आँगनक मुँहथैरपर ठाढ़ भऽ सुनि रहल छेली, मुदा कियो आगू बढ़ि किछु कहैक साहस नहि केलैन।

कमला दादी बेतुकार गारि पढ़ि रहल छेली आ अपने चुपचाप सुनि रहल छेलौं। जैठाम दुनू पक्ष रहत तैठाम ने दुनू पक्षक विचार सुनि विचारक योग बनाएब जइसँ योगी बनि दुनू पक्ष भविष्य दिस बढ़त।

कमला दादीक मुहसँ अनेको रंगक गारि सुनि बजलौं-

“दादी, समाजे निरलज अछि। जइ समाजमे विधवाक कोन बात जे कोमल-सुकुमार बाल-बोधक इज्जतक संग खेलवाड़ भऽ

रहल अछि तैठाम कहले की जाए। मनुक्ख तँ मनुक्खे भेला जे देवियो देवता बिना घूस-पेँच नेने कोनो काज करैले तैयार नहि छैथ। मुदा इज्जतोक तँ अपन मूल्य अछिए। तँए ने जे जीवनमे सभ किछु हारि गेल छैथ, पति, बेटा, परिवार इत्यादि सभ किछु, ओहो अपन इज्जत ले मरै-मिटैले तैयार छैथ। भाय, मिथिलाक माटि-पानि तँ ओहिना उर्वर अछि, जैठाम सीता सन देवी शिवजीक धनुष उठा धरतीमे पवित्र बीज सेहो तँ बाउग केनहि छैथ, तैठाम बाँकीए कि बँचल अछि जे कहब।”



शब्द संख्या : 1367, तिथि : 13 जून 2022

निसगर पान

चारि बजे बेरुका समय। भोज खा कऽ आएल रही, मन असविस करैत रहए। तहूमे मुम्बैया भनसिया जे रसगुल्ला बनबैमे बंगालियोक कान काटैए, तेकर बनौल रसगुल्ला-गुलाबजामुन छल तँए बीचमे आँठी-ताँठीक दरस नहि रहने एकावनटा सँ कम नहि बेसीए खेलौं। ओना, मन ईहो कहए जे जँ रिफाइन कएल चटनी नइ रहैत तँ अनकर बात तँ नहि कहब मुदा अपन बात कहै छी जे तइमे पाँचटा रसगुल्ला कम खइतौं। मन असविस करैत मन कहलक जे जखन ओछाइन पकैड़ दू-घन्टा आराम करब तखन भोजनक कड़ लागत। जखन पेटमे कड़ लागत तखन मनमे चैन औत। बेसुधि अचेत जकाँ निसगर साँची खिल्ली पान मुँहमे देनहि ओछाइनपर खसलौं।

एक तँ पेटमे अन्नक ताव, तैपर मिठाइक चढ़ाइसँ असविस करैत मनमे शंका भेल। शंका ई भेल जे जँ अखन किछु भइये जाए आकि पेटे फुटि जाए तखन के बँचौत? कियो बँचेबो केना करत? बेचाराकेँ बुझल रहतै तखन ने, आ जँ नहि बुझल रहत तँ ओही बेचारा सभकेँ की दोख देबइ। पानक जे उनाड़ी मनमे छल ओ तेसरे लीला पसारने जा रहल छल जे जखन मिथिलाक जानो-मानो, साँची, कलजोरिया आदि-आदि पान, आदियेकालसँ अपन धरोहर छी जेकरा जानिकऽ मानने छी, तखन मगहीक मिट्ठा पान आ बंगालक बंगालीकेँ कोन मोजर हएत। एकर माने ई नइ बुझब जे

बंगालक किसान पानक जड़ि-मूलकेँ पकैड़ अपनाकेँ स्थापित नहि केने छैथ आ आनठामक किसान लोइट उठबै, ओना नव तकनीक भेने लोइटक युग पाछू पड़ि गेल, सँ दोसराक गुलामी करबकेँ नीक बुझै छैथ। भाय, मिथिलाक चूड़ा-दही ओहिना नै अपन झण्डा दुनियाँ उठौने अछि। ओ ईहो उठेने अछि जे कोन वस्तु केते खाइ, कोन मात्रामे की खाइ।

मिथिला मनमे अबिते अपन सीमा-सम्बन्ध आ वैचारिक द्वन्द्वपर नजैर चलि गेल। बजनिहारकेँ कियो मुँह रोकनिहार अछि, पूब मिथिलासँ बीच मिथिला धरिमे मेरचाइकेँ सीमा निर्धारित करैत ओकर शील-गुणकेँ देख-मानि तत्त्ववेता लोकैन सुआदकेँ 'कड़ू' कहै छिऐ आ पच्छिम मिथिलासँ भोजपुर धरिमे मेरचाइकेँ 'तीत' कहल जाइए। आब कहू जे अपना सभ करू माने करैले कहै छिऐ आ ओ सभ (माने पच्छिम मिथिलामे) तीत कहि नकारि रहल अछि, तैठाम तँ भगवाने ने मालिक हेता।

अप्पन रछिया अपने करैत कहुना-कहुनाकऽ ओछाइनपर सँ उठि मथनलाल काका ऐठाम जेबाक विचार ऐ दुआरे केलौं जे ओ रंग-बिरंगक पाचक-पचनोल सेहो रखै छैथ, जँ एक खोराक दऽ देलैन तँ जान हल्लुक भऽ जाएत। एकटा पेशाव ठीक रहने तँ लोक एक घैल ताड़ी पचा लइए आ अपन एकाबनटा रसगुल्लाकेँ कि एकटा पचनोल नइ पचा सकैए।

घरसँ निकैल जखन गामक बाट पकड़लौं तखन अपने मन कहलक जे बाट चलैतकाल देह-हाथ सोझो आ साकांचो राखी। से नइ रखने लोक अनेरे ने कहत जे खाइ-काल पेटमे भोंकार फुटि जाइ छैन आ चलै काल आहि-आलम करै छैथ। ओना, मुँहक जे पान छल ओ अपन झलक तेना ने मनमे झलकारि रहल छल जे बुझि पड़ए

रस्तेमे ने कहीं ओक-वमन चालू भऽ जाएत। मुँहक पानकेँ फेकियो केना दैतिऐ। एक तँ साँची पत्ता पान छल दोसर तमौलीक लगौल-सजौल रहने बिनु रस पीने फेकब उचित नहि बुझि पड़ए। तँए मुँह बन्न केने दाँतक तरमे खिल्लीकेँ दबने आगू बढ़ल जाइत रही।

तैबीच ढकार करैक मन भेल। बुझल बात अछिए जे शरीरक भीतर उनसार पवन सेहो चलिते अछि। जेना-जेना पेटक पवन (ढकार करैक) ऊपर मुहेँ उठैत गेल तेना-तेना पेटक भोज्य वस्तु तरमुहाँ दबाइत गेल। कण्ठ लग एला पछाइत मन अपन लाभ देखि पवनकेँ रोकलक। लाभ ई देखलक जे जँ कहीं हवाक[15] झोंकमे पेटक रसगुल्ला-लालमोहन, माने कण्ठ लग ठेकल भोजनक अन्तिम विन्यास, धरतीपर खसि पड़त तखन अनेरे खेबे किए केलौं। तँए ढकारक हवाकेँ मुँहकेँ ऊपर-मुहेँ उठा निकाललौं। ढकार होइते जेना मन हल्लुको भेल आ कण्ठो सर्रास भेल, तइसँ पानक लहलही आरो बढ़ल।

चारि डेग आगू बढ़लौं कि अपने मनमे ठहकल जे मथनलाल काका झोंकाह लोक छैथ, जँ कहीं भोज खाएलक नाओं सुनि झोंकमे अवाचे बात-कथा कहए लगैथ तखन की करब? अपन मनक असविसीकेँ सम्हारब आकि मथनलाल कक्काक झोंकक हवाकेँ सम्हारब? फेर मन कहलक जे 'मरता क्या ने करता', अखन अपन दशा देखिये रहल छी जे मथनलाल काका सन विचारवान लोक लग जाइसँ डेग नहि उठि रहल अछि, तैठाम नीक-अधलाक विचार करैत नीककेँ स्थापित करब ओते असान अछि। मुदा लगले फेर अपने मनमे उठल जे जखन देश सेवाक पियास मनुक्खक मनमे जगैए तखन खून-पानि समान भऽ जाइए। तहिना ने समाजो आ

[15] **ढकारक हवा**

बेकतीक मनोक पियास भेल। डेग आगू बढ़ल।

दलानपर मथनलाल काका आगूमे पान उपजौनिहार किसान-जुगेसरकेँ बैसा मध्यम स्वरमे गप-सप्प कऽ रहल छला तँए दरबज्जाक ओसारक निच्चाँ तक मथनलाल कक्काक आवाज स्पष्ट नहि सुनि पेब रहल छेलौं। लगमे बैसैसँ पहिने, माने प्रणाम-पातीसँ पूर्व, पानक रससँ बनल पीत मुँहमे तेना नून-चीनी मिलल पानि जकाँ घोरा गेल छल जेना ज्ञान-कर्मक एकभूमि बनि एकरस भऽ जाइए। जेकरा फेकै वा नइ फेकैक स्थिति बनियेँ गेल छल। मुदा दोसर लग जखन एकठाम बैसब, तहूमे श्रेष्ठजन लग तखन पानक पीतक कोन बात जे मुँहक पानोकेँ फेक देब सोहंतगर हेबे करैए। पानक पीत दरबज्जाक निच्चेमे फेक बजलौं- "गोड़ लगै छी काका.!"

हमर बोलक ध्वनिक स्वरसँ आकि बाट चलैत बटोहीक गति-विधिसँ मथनलाल काका जेना बुझि गेल होथि जे गरीबलाल केतौ अनकर अन्न-पानि दाबिकऽ आएल अछि। हाथेक इशारासँ मथनलाल काका बगलमे बैसैले कहलैन। गोड़ लगाइ तरे कनी मुड़ी डोला देलैन। मुदा मुहसँ किछु नहि बजला। चुपचाप अपनाकेँ असथिर करैत बगल दबिकऽ देवालमे ओङैठ बैस रहलौं, मुदा पएर पसारलौं नहि। पसारबो केना करितौं। अपनासँ शिष्टजन लग पएर पसारिकऽ देवालमे ओङैठ बैसब, मिथिलाक माटि-पानिमे ने कहियो उपजल अछि आ ने उपजैक सम्भावने अछि। ओना, परिवेश एहेन बनियेँ गेल अछि जेना कहल जाइए जे 'राँड़ कानए, एहिवाती कानए, तइ लागल बड़कुमारि कानए।' कियो कहै छैथ मिथिला वासी अपन जन्मभूमि छोड़ि अमेरिकामे घर-आँगन बना तुलसी चौरा गाड़ि लेलैन। तँ कियो कहता जे समाज तेना हमरा उड़ी-बिड़ी लगा देलैन जे भागैले मजबूर भऽ गेलौं। आब कहू जे एहेन विपरीत स्थितिमे केमहर आ केतए ठाढ़ हएब?

ओना रही, माने दरबज्जाक देवालमे ओङैठ कऽ बैसल, मथनलाल काकासँ लग्गा भरि, माने साढ़े छअ-सात हाथ, हटल मुदा साँची पानक गमगमी, मुँहक सुगन्धित हवा, अगरवत्ती जकाँ सौंसे घर गमगमैबते छल। मथनलाल काका जुगेसरकेँ पुछलखिन- "जुगे, जीविकाक की रहन-सहन छह?"

'जीविकाक रहन-सहन' सुनि जुगेसरक मन मार्माहत जकाँ भऽ गेलैन। बेचारेकेँ हेबो केना ने करितैन, पान उपजौनिहार किसानक जे अपन परम्परासँ जीविका रहलैन, तइमे समयानुकूल किछु उपाय तँ भेल नहि। माने ई जे जेना जीवन-पद्धति परिवर्तित-परिवर्धित होइत चलला पछाइत समयानुकूल बनैए तहिना ने आनो वस्तु होइए, से नहि भेल। आन-आन देश आ आन-आन क्षेत्रमे कमोवेश बदलाव जरूर आएल मुदा मिथिलांचलक सम्पतिक संग अन्याय नहि भेल सेहो नहियेँ कहल जाएत। जेना, मवेशिये पालन हुअए कि माछे पालन हुअए कि खेतीए-बाड़ी आकि फले-फलहरी किए ने हुअए, की देखै छी? यएह ने देखै छी जे हजारो बर्खसँ अबैत मालदह आम ओहिना-क-ओहिना अखनो अछि जेना हजारो बरख पूर्व छल। तहिना रोहु माछ सेहो ओहिना अखनो अछि जेना हजारो बरख पहिने छल। तहिना माल-मवेशीकेँ देखै छी जे आन-आन राज्य (क्षेत्र)सँ दुधारू गाए-महींस अपना ऐठाम आबि परचम लहरा रहल अछि, मुदा की अपना ऐठाम पशु-पालन नहि होइ छल जेकर परिवर्तन-परिवर्द्धन होइत? ..जुगेसर बाजल-

"काका! की कहब, अहाँ सभक मुँह देखि गाम छोड़ल नहि जाइए, ने ते जहिना हजारो ओहन परिवार जे अपना-ऐठाम[16] गरीब बोनिहारक श्रेणीमे छला ओ अपन हस्तकलासँ माने खेती करैक

[16] **पुरना दरभंगा, नवका मधुबनी जिला**

लूरिक बलेँ नेपालमे जा बसला आ अखन सुभ्यस्त किसानक रूपमे विराजमान छैथ, तहिना अपनो जँ एतएसँ चलि जइतौं.!”

ओना, जुगेसरक विचारकेँ मथनलाल काका मुड़ी डोला-डोला स्वीकारि रहल छला, मुदा बाजि किछु ने रहल छला। अपन तँ भरल पेट रहबे करए तँए बजैले मुँह लुसफुसाइते छल। अनायासे बजा गेल-

“काका, अपना ऐठाम अखनो साँची पानक अपन रूतबा अछिए।”

अपना जनैत जइ रूपेँ बाजल छेलौं, तइसँ वृहद् रूपमे मथनलाल काका बुझिकऽ मुड़ी तँ डोला देलैन मुदा सुनैक रूप बनौनहि रहला। ओना, अपनो तइसँ आगू किछु नहि बजलौं। हमरा चुप देखि थोड़ेकालक पछाइत मथनलाल काका बजला, मुदा बजला एतबे-

“निसगर पानक अपन महत्व तँ अछिए।”

कक्काक बातक संक्षिप्त रूपसँ अपना बुझि पड़ल जे मथनलाल काका पेन[17] पकैड़ विचारि रहला अछि। खोधियबैत पुछलयैन-

“काका, अहाँ किछु छिऐ मुदा छिऐ तँ समाजक मेहे ने, आन मानए वा नहि मानए मुदा हम तँ मानिते छी।”

भाय, यएह तँ जीवनलीला छी। निसगर विचारकेँ जँ निसगर साँची पान जकाँ दँतबस्सा तर रखि मंथन करैत ओकर मधुर रस-पान करी तँ वएह ने निसगर जीवन। कियो निसगर पान तँ कियो निसगर अन्न तँ कियो निसगर विचारक पान करिते छैथ।

---

[17] **गहराइ**

मथनलाल काका कहलैन-

“गरीबलाल, जहिना खोदे-वेद वेद छी तहिना करैक प्रक्रिया सेहो ने वेदे छी।”

मथनलाल कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझलौं, मुदा जखन श्रेष्ठ मानि रहल छिऐन तखन अपनो शिष्टाचार ने किछु हेबे करत। तँए चुप्पे रहलौं। चुप्पो रहब तँ महाभूषण छीहे।



शब्द संख्या : 1346, तिथि : 15 जून 2022

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019
827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019
828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019
829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019
830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019
831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019
832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019
833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019
834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019
835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019
836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019
837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019
838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019
839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019
840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019
841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019
842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019
843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019
844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019
845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019
846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019
847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019
848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019
849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019
850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019
851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019
852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019
853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुद्दष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुद्दढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैं बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

